ओ३म्

सुधारक

गुरुकुल झज्जर का लोकप्रिय मासिक पत्र

वर्ष 65 अंक 10 10 जून 2018 द्वितीय ज्येष्ठ 2075 वार्षिक मूल्य 150 रु०

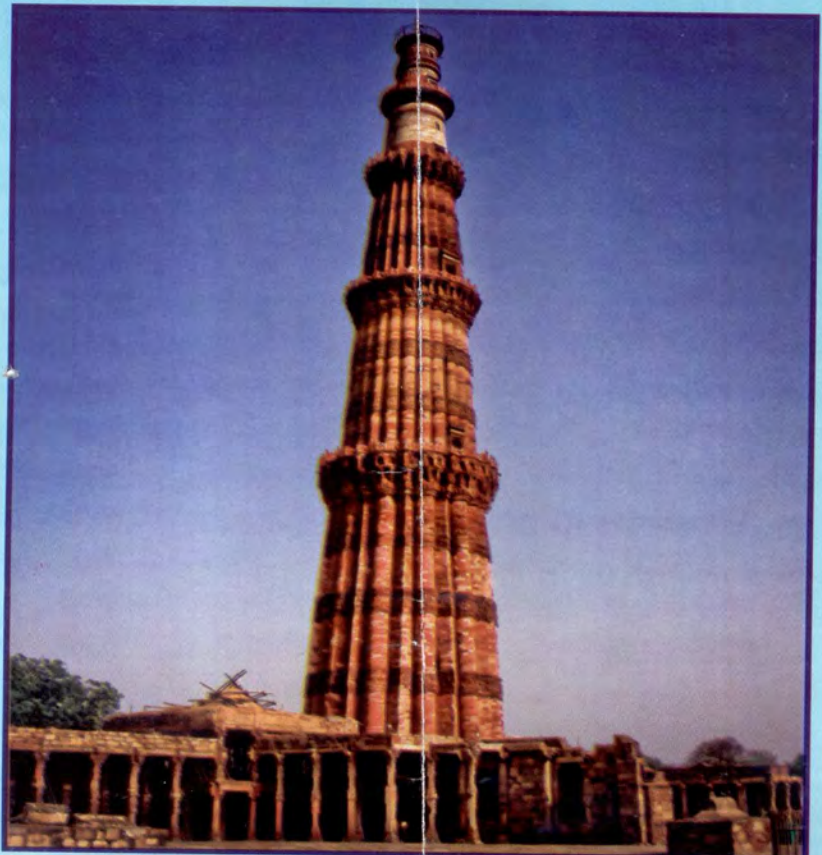

आचार्य वराहमिहिर द्वारा निर्मित वेधशाला के अवशिष्ट एकमात्र अंग महरौली (दिल्ली) में स्थित ज्योतिष सम्बन्धी सूर्यध्वज (कुतुबमीनार) की परछाई सबसे बड़े दिन 21 जून को मध्याह्न 12 बजे भूमि पर नहीं पड़ती इच्छुक व्यक्ति महरौली जाकर इसे प्रत्यक्ष देख सकते हैं।

संस्थापक : स्व० स्वामी ओ३मानन्द सरस्वती
प्रधान सम्पादक : आचार्य विजयपाल
सम्पादक : विरजानन्द दैवकरणि
व्यवस्थापक : ब्र० अरुण आर्य

सुधारक के नियम व सविनय निवेदन

1. सुधारक का वार्षिक शुल्क 150 रुपये है तथा आजीवन सदस्यता शुल्क 1500 रुपये है।
2. यदि सुधारक 20 तारीख तक नहीं पहुंचता है तो आप व्यवस्थापक सुधारक के नाम से पत्र डालें। पत्र मिलते ही सुधारक पुनः भेज दिया जाएगा।
3. वार्षिक शुल्क तथा आजीवन शुल्क मनीआर्डर द्वारा '**व्यवस्थापक सुधारक**' के नाम भेजें। सुधारक वी.पी. रजिस्ट्री द्वारा नहीं भेजा जाएगा।
4. लेख सम्पादक सुधारक के नाम भेजें, लेख छोटे, सरल, संक्षिप्त, सारगर्भित तथा मौलिक होने चाहिएं तथा स्पष्ट, शुद्ध एवं सुन्दर लेख में कागज के एक ओर लिखे जाने चाहिएं। अशुद्ध एवं गन्दे लेखवाला लेख नहीं छापा जाएगा। लेखों को प्रकाशित करना न करना तथा उनमें संशोधन सम्पादक के अधीन होगा। अस्वीकृत लेख डाक-व्यय प्राप्त होने पर ही वापिस भेजे जाएंगे।
5. सुधारक में विज्ञापन भी दिए जाते हैं, परन्तु विज्ञापन शुद्ध एवं वास्तविक वस्तु का ही दिया जाएगा।
6. यह सुधारक मासिक पत्र समाजसुधार की दृष्टि से निकाला जाता है। इसमें आपको धर्म, यज्ञकर्म, समाजसुधार, देश व समाज की स्थिति, ब्रह्मचर्य, योगासन आदि विषयों पर लेख पढ़ने को मिलेंगे।
7. सुधारक के दस ग्राहक बनानेवाले सज्जन को एक वर्ष तक निःशुल्क सुधारक भेजा जाएगा तथा पचास ग्राहक बनानेवाले सज्जन को दो वर्ष निःशुल्क सुधारक भेजा जाएगा तथा उसका फोटो सहित जीवन परिचय सुधारक में निकाला जाएगा।

—व्यवस्थापक

वर्ष :65 अंक : 10
जून 2018 विक्रमाब्द 2075
दयानन्दाब्द 195 कलिसंवत् 5118
सृष्टिसंवत्-1,96,08,53,118

विषय-सूची

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ
1.	आर्याभिविनयः	1
2.	सम्पादकीय	2
3.	आपातकाल का एक कटु अनुभव	6
4.	हृदयरोगों के कारण, बचाव प्राथमिक...	7
5.	कागज के फूल	9
6.	महर्षि दयानन्द की अमर वाणी	11
7.	सम्भा जी (शिवाजी का पुत्र) का....	16
8.	पाठकों की प्रतिक्रिया	21
9.	प्रतिक्रिया के उत्तर में	23
10.	आर्यसमाज काकड़वाडी मुम्बई...	24

नोट :- लेखक अपने लेख का स्वयं जिम्मेवार होगा।

सुधारक मासिक पत्र का वार्षिक शुल्क १५० रुपये भेजकर स्वयं ग्राहक बनें और दूसरे साथियों को भी ग्राहक बनाकर सुधार कार्य में सहयोग दीजिये।

-व्यवस्थापक सुधारक

आर्याभिविनयः

स्तुति-विषय

किॐस्विद्वनं कऽ उ स वृक्ष आस
यतो द्यावापृथिवी निष्टतक्षुः।
मनीषिणो मनसा पृच्छतेदु
तद्यदध्यतिष्ठद् भुवनानि धारयन्।। 36।।

यजु० 17।20।।

व्याख्यान— प्रश्नोत्तरविद्या[1]**—(प्रश्न)** [**(किंस्विद् वनं क उ स......निष्टतक्षुः)**] वनः और वृक्ष किसको कहते हैं? (**उत्तर**) जिस सामर्थ्य से विश्वकर्मा ईश्वर ने जैसे तक्षा=बढ़ई अनेकविध रचना से अनेक पदार्थ रचता है, वैसे ही स्वर्ग=सुखविशेष और भूमि=मध्य सुखवाला लोक तथा नरक=दुःखविशेष और [इन] सब लोकों को रचा है, उसी को 'वन' और 'वृक्ष' कहते हैं। हे (**मनीषिणः**) विद्वानो! [**(यदध्यतिष्ठत्०)**] जो सब भुवनों को धारण करके सब जगत् में और सबके ऊपर विराजमान हो रहा है, उसके विषय में प्रश्न तथा उसका निश्चय तुम लोग करो। (**मनसा०**) उसी के विज्ञान से जीवों का कल्याण होता है, अन्यथा नहीं[1]।।36।।

प्रार्थना-विषय

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्।
पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतॐ
शृणुयाम शरदः शतं प्र ब्रवाम शरदः शत-
मदीनाः स्याम शरदः शतं
भूयश्च शरदः शतात्।।37।।

यजु० 36।24।।

व्याख्यान— (तत्) वह ब्रह्म (**चक्षुः**) सर्वदृक् चेतन है, [**(देवहितम्)**] तथा देव अर्थात् विद्वानों के लिये वा मन आदि इन्द्रियों के लिये हितकारक मोक्षादि सुख का दाता है। (**पुरस्तात्**) सबका आदि प्रथम कारण वही है। (**शुक्रम्**) सबका करनेवाला, किंवा शुद्धस्वरूप है। (**उच्चरत्**) प्रलय के ऊर्ध्व वही रहता है। [**(पश्येम.....शतात्)**] उसी की कृपा से हम लोग 100 वर्ष तक देखें, जीवें सुनें कहें, किसी के पराधीन न हों। अर्थात् ब्रह्मज्ञान बुद्धि और पराक्रमसहित इन्द्रिय तथा शरीर सब स्वस्थ रहें। ऐसी कृपा आप करें कि कोई अंग मेरा निर्बल=क्षीण तथा रोगयुक्त न हो, तथा सौ वर्ष से अधिक भी। आप कृपा करें कि सौ वर्ष से उपरान्त भी हम देखें जीवें सुनें कहें और स्वाधीन ही रहें।।37।।

प्रार्थना-विषय

या ते धामानि परमाणि यावमा
या मध्यमा विश्वकर्मन्नुतेमा।
शिक्षा सखिभ्यो हविषि स्वधावः
स्वयं यजस्व तन्वं वृधानः।।38।।

यजु० 17।21।।

व्याख्यान— हे सर्वविधायक विश्वकर्मन्नीश्वर! [**(या ते.....उतेमा)**] जो तुम्हारे उत्तम माध्यम निकृष्ट त्रिविध धाम=लोक हैं, [**(शिक्षा सखिभ्यः)**] उन सब लोकों की शिक्षा हम आपके सखाओं को करो। यथार्थ विद्या होने से सब लोकों में सदा सुखी ही रहें। तथा इन लोकों के (**हविषि**) दान और ग्रहण व्यवहार में हम लोग चतुर हों। हे (**स्वधावः**) स्वसामर्थ्यादि धारण करनेवाले! [**(तन्वं वृधानः)**] हमारे शारीरादि पदार्थों को आप ही बढ़ानेवाले हैं। (**यजस्व**) हमारे लिये विद्वानों का सत्कार, सब सज्जनों के सुखादि की संगति, विद्यादि गुणों का दान आप स्वयं करो। आप अपनी उदारता से ही हमको सब कुछ दीजिये। हम लोग तो आपके प्रसन्न करने में कुछ भी समर्थ नहीं हैं। सर्वथा आपके अनुकूल वर्तमान नहीं कर सकते, परन्तु आप तो अधमोद्धारक हैं, इससे हमको स्वकृपा-कटाक्ष से सुखी करें।।38।।

सम्पादकीय....

भारतवासियों पर अंग्रेजी राज में अत्याचार के कुछ उदाहरण

(श्री शशिथरूर द्वारा रचित-अंधकारकाल, भारत में ब्रिटिश साम्राज्य के आधार पर प्रस्तुत)

स्वतन्त्र भारत में अंग्रेजों की भाषा, वेशभूषा, खान-पान, रहन-सहन और आचार व्यवहार का अन्धानुकरण करने की लालसा भारतीय जनता में बढती ही जा रही है। जिन लोगों ने भारत पर राज करते हुए भारत की प्रत्येक प्रकार से हानि की हो, लाखों निरपराध लोगों को घोरतम पीड़ा देकर उनकी हत्यायें की हों, भारत की मूल प्राचीन शिक्षा प्रणाली, सभ्यता, संस्कृति, व्यापार, आचार व्यवहार, उद्योगधन्धे तथा प्रेमभावना को नष्ट किया हो, उन अंग्रेजों के प्रति उपेक्षा रखना तो दूर रहा, उनके प्रति श्रद्धा और आस्था प्रकट करके गौरव का अनुभव करने में लज्जा भी अनुभव नहीं करते।

इसी अन्धानुकरण का यह दुष्प्रभाव है कि भारत की युवा पीढी में प्राचीन भारतीय भाषा, सभ्यता, संस्कृति आदि के प्रति घृणा और अनास्था पनपती जा रही हैं। वर्तमान शिक्षा पद्धति में मुस्लिम और अंग्रेज शासकों द्वारा किये गये अत्याचारों का वर्णन न करके उन्हें महिमा मण्डित करके दिखाया जाता है, इसीलिये छात्र समुदाय सत्यता से अपरिचित ही रहता है।

भारत के स्थानीय राजा-महाराजा आदि एक सूत्र में आबद्ध न होकर अपने-अपने राज्य तक सीमित रहते रहे और अंग्रेजों की फूट डालने वाली नीति का शिकार होकर जनता के धन से ऐशो आराम का जीवन जीने में ही अपना कल्याण मानते रहे। यदि ये शतश: राजा-महाराजा स्वार्थ छोड़कर अंग्रेजों के विरुद्ध उठ खड़े होने तो भारत को ऐसे दुर्दिन देखने नहीं पड़ते। अस्तु! यहां पाठकों की जानकारी हेतु अंग्रेजों द्वारा किये गये अत्याचारों का सामान्य परिचय दिया जा रहा है।

1. जब अंग्रेज भारत का शासन कर रहे थे, उस समय देश में अनेक दुर्भिक्ष (अकाल) पड़े थे। जैसे सन् 1770 में बंगाल में, 1782-83 में मद्रास में, 1783-84 में दिल्ली और इसके निकटवर्ती क्षेत्रों में, 1866 में उड़ीसा में, 1873-74 में बिहार में, 1876-77 में दक्षिण भारत में, 1899-1900 में प्राय: करके सारे भारत में (इस अकाल को ग्रामीण लोग छप्पनिया काल कहते थे, यह संवत् 1956 में पड़ा था) 1905-06 में बम्बई में, 1943-44 में बंगाल में। इस प्रकार इन दुर्भिक्षों में लगभग 6 करोड़ व्यक्ति तथा असंख्य पशु मृत्यु का ग्रास बन गये थे। जब अकाल से लोग भूखे मर रहे थे, उस समय अंग्रेजों ने दस करोड़ सेर चावल इंगलैंड में भेजे थे। यह निर्दयता की पराकाष्ठा है। जिन लोगों के कठोर परिश्रम से चावल पैदा हुआ, उन्हें भूखे मारकर अंग्रेजों ने अपने मूल देश में खाद्यसामग्री भेजकर भारतीय जनता के साथ घोर अन्याय और अत्याचार किया।

2. इन अकालों के समय जब किसान अन्न पैदा नहीं कर पाया, तब भी उनसे क्रूरतापूर्वक भूमिकर उगाहा गया।

3. इन कठिन दिनों में कुछ जमीदारों, व्यापारियों और सहानुभूति रखने रखने वाले भारतीयों ने निर्धनों को काम देकर बदले में अन्न के द्वारा उनकी भूख को शान्त करने का प्रयत्न किया तो ईस्ट इंडिया कम्पनी ने इसे भी सहन नहीं किया और तर्क यह दिया कि हम शारीरिक रूप से समर्थ

व्यक्तियों को ही काम देंगें, परन्तु साधारण जनता को अकारण सहायता नहीं दी जा सकती।

अंग्रेजों की इस प्रकार की भावना की अभिव्यक्ति लार्ड लिटन ने यह कहकर की कि उसने यह दुर्भावना से किया था। जिस देश पर शासन करते हुए ही वहां की सम्पत्ति लूटकर ब्रिटेन को धनधान्य से पूरित कर दिया, उसी शासित देश की जनता के लिए अकाल पीड़ित राहत कोष बनाने में भी व्यवधान डालना अंग्रेजों की क्रूरता का परिचायक है।

4. जिस समय भारत की जनता अकाल से पीड़ित थी, उस समय ब्रिटेन के शासक चर्चिल ने यह आदेश दिया था कि भारत के अन्न को ब्रिटिश सैनिकों तथा यूरोप और यूनान के अन्न भण्डारों में भेज दिया जाये। जब चर्चिल को उसकी नीतियों की शिकार प्रजा के कष्टों से अवगत कराया तो उसने कहा-अकाल पड़ना भारतीयों का दोष है, क्योंकि ये लोग खरगोशों के समान बच्चे पैदा करते रहते हैं। चर्चिल ने अकाल पीड़ितों पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए यहां तक भी कह दिया था कि गांधी की अभी तक मृत्यु क्यों नहीं हुई ? यह है ईसाई सम्प्रदाय वालों की आन्तरिक भावना।

5. अकाल से अतिरिक्त प्लेग जैसी भयंकर महामारी में भी भारत की जनता कीड़े-मकोड़ों की भांति मर रही थी। सन् 1901 से 1904 तक 25 लाख से अधिक लोग प्लेग के कारण मर चुके थे। शेष समय की बिमारियों से मरने वाले लोगों की संख्या इस संख्या सहित सवा करोड़ बैठती है। इन मृत्युओं पर अंग्रेजों की प्रतिक्रिया यह थी कि अत्यधिक जनसंख्या को निमन्त्रित करने का यह दैवी उपाय है। प्लेग इसीलिए प्रशंसनीय है कि यह उन लोगों को समाप्त कर देता है जिन्हें सरकार ने कत्ले आम से बचाया है।

6. विश्व के अधिकतम भाग पर अपना शासन स्थापित करने के लिए तथा उन स्थानों को बसने के योग्य बनाने के लिए अंग्रेजों ने भारत से लाखों लोग बलपूर्वक विदेशों में भेजे। ऐसे लोगों में सैनिक, कैदी तथा बंधुआ मजदूर तीनों प्रकार के व्यक्ति थे। सन् 1789 से 1862 तक सुमात्रा, मलेशिया, इण्डोनेशिया, मारिशस, सिंगापुर, बर्मा और अराकान आदि देशों में भारतीय कैदियों और मजदूरों को भेजा, जिनसे वहां सफाई, भवन निर्माण और खेती आदि का कार्य लिया गया। कैदी तथा स्वेच्छा से जाने वाले पांच लाख व्यक्ति मारीशस में भेजे थे, जिनमें से सैंकड़ों व्यक्ति यात्रा के कष्टों और रोगों से मर गये। ऐसे लोगों का जीवन दासों के समान था। अण्डमान में भी इसी भांति कैदी भेजे गये और उनसे कृषि तथा भवन निर्माण जैसे कार्य कराये गये। यह भी भाग्य की विडम्बना ही थी ऐसे कैदी लोग अपने लिए ही जेल का भवन बना रहे थे। इसी भांति भारत से गयाना, फिजी, दक्षिण अफ्रीका और सुरिनाम आदि में भेजे गये बंधुआ मजदूर आदि की संख्या 35 लाख तक हो गई थी।

इन बंधुआ लोगों को भारत में लौटने तथा उनके परिवारों से सम्बन्ध रखने की कोई सुविधा नहीं थी। यदि पांच वर्ष के अनुबंध के पश्चात् कोई स्वदेश लौटना भी चाहे तो किराया इतना अधिक मांग लिया जाता था कि उनके सामान्य वेतन से उसकी पूर्ति होनी असम्भव थी। इसलिए मन मारकर वहीं रहने को विवश होना पड़ता था। इतना सब होने पर भी अंग्रेजों ने यह प्रचार किया कि हमने भारतीयों की सुविधा हेतु भारत पर राज किया, रेलवे लाइन बिछाई, पुल बनाये आदि आदि। परन्तु

सचाई यह है कि जिन स्थानों से भारत का कच्चा माल रेलगाड़ी द्वारा लादकर समुद्री जहाज तक पहुंचाना होता था, वहीं रेलवे लाइन पहले बिछाई गई थी, इसमें भारतीय जनता की सुविधा को प्राथमिकता नहीं थी, इसमें भारतीय जनता की सुविधा को प्राथमिकता नहीं थी। इन रेलगाड़ियों में भी प्रथमश्रेणी के डिब्बों में भारतीय लोग यात्रा नहीं कर सकते थे। यहां भी पक्षपातपूर्वक व्यवहार किया जाता था।

7. सन् 1857 के क्रान्तिकारी वीरों को विद्रोही बताकर उन्हें क्रूरतम यातनाएं दी गई, फांसी पर लटकाया गया, तोप के मुंह पर बांधकर उनके परखचे उड़ाये, पत्थर के भारी कोल्हू के नीचे दबाकर हड्डी पसली तोड़ी गई ग्रामों को जलाया गया। भारत के कपड़ा उद्योग को समाप्त करने के लिए कुशल कारीगरों के अंगूठे कटवाये गये जिससे वे महीन कपड़ा न बना सकें और बदले में इंगलैंड का कपड़ा भारत में बेचा जा सके।

8. तंजौर के राजा के विरुद्ध छेड़े गये अभियान में एक अंग्रेज अधिकारी ने सन् 1790 के आसपास कौंसिल को सूचना भेजी-मैं प्रतिरोध को केवल प्रतिहिंसा से शान्त कर सकता हूं, इसके लिए मुझे लूटपाट करनी होगी, गांवों को जलाना होगा, महिलाओं और बच्चों को बन्दी बनाना होगा।

9. सन् 1805 में वैल्लोर की क्रान्ति को क्रूरता से दबाया गया। 350 क्रान्तिकारियों को इकट्ठा बांधकर अदालत की दीवार के साथ खड़ा करके 30 गज की दूरी से गोली चलाकर मार दिया। 6 वीरों को तोप के मुंह से बांधकर उड़ा दिया। 5 व्यक्तियों को अलग से गोली मारी गई, आठ लोगों को फांसी दे दी गई। यह काण्ड अपना आतंक जमाने के लिए किया गया, जिससे जनता भयभीत रहे और अंग्रेजों के विरुद्ध कुछ न कर सके।

10. ह्यून रोज ने झांसी में 5000 निरपराध नागरिक मार गिराये। दिल्ली के एक ही कूचे (गलियारे) में 1400 निहत्थे नागरिक मार दिये गये।

11. सन् 1872 में मलेरकोटला (पंजाब) में 65 सिखों को तोप के मुंह से बांधकर उनके टुकड़े-टुकड़े कर दिये।

12. पेशावर के किम्मा ख्वानी बाजार में सन् 1930 मे 400 निरपराध भारतीयों को कत्ल किया गया। निर्दयता से मारने पीटने, कौड़े लगाने, जातिगत अपमान करने आदि अनेक प्रकार के कदम उठाकर लोगों को सताया जाता था।

13. अंग्रेजों की पुलिस द्वारा सामूहिक बलात्कार करना, नंगे शरीर कैदियों को बर्फ की सिल्ली पर तब तक लिटाये रखना जब तक वह बेहोश न हो जायें।

14. 13 अप्रैल 1919 को अमृतसर के जलियांवाले बाग में हुए गोलीकांड से सभी भारतीय परिचित हैं। शान्तिपूर्वक वैशाखी का मेला मनाने के लिए एकत्र हुए निहत्थे जनसमूह पर बिना पूर्व चेतावनी दिये डायर ने 150 गज की दूरी से 1650 गोलियां चलवाई। उस समय के विवरणानुसार 1499 व्यक्ति मारे गये, 1137 घायल हुए। सरकारी आंकड़ों के अनुसार 379 व्यक्ति मरे और 1516 घायल हुए। उन घायलों की सहायता न करने के लिए भी सैनिकों को आदेश दिया। चौबीस घण्टों तक सभी भारतीयों को घर से बाहर न निकलने का आदेश दे दिया। घायलों को पानी तक नहीं पिलाया गया।

डायर ने अपनी सफाई में कहा-यह एक विद्रोही सभा थी। सभा ने मेरे आदेशों का पालन नहीं किया। अत: सभा को दण्डित करना पड़ा। भीड़ को हटाने के लिए केवल हवाईफायर करना पर्याप्त नहीं था। क्योंकि सब लोग मुझपर हंसते।

15. भारतीयों पर आतंक जमाने के लिए झूठी कहानी घड़ने में भी अंग्रेज परहेज नहीं करते थे। भारतीय व्यक्ति पर एक आरोप लगाया गया कि उसने एक मिशनरी महिला पर आक्रमण किया है अत: जनरल डायर ने आदेश जारी किया कि जिस गली में मिशनरी महिला को पीटा गया है, उस गली के सभी हिन्दू पेट के बल रेंगकर उस गली को पार करें, यदि रेंगने वाले व्यक्ति पेट की अपेक्षा हाथों और पैरों के बल रेंगने की चेष्टा करते तो सिपाही अपनी बंदूकों के हत्थों से प्रहार करते। डायर ने 500 प्रोफेसर और विद्यार्थियों को गिरफ्तार किया। सभी छात्रों को प्रतिदिन हाजिरी देनी पड़ती थी। कुछ छात्रों को 16 मील प्रतिदिन पैदल चलकर उपस्थिति लगानी होती थी। नागरिकों और स्कूल के छात्रों को कोड़े लगाये गये। गिरफ्तार लोगों को बिना छत के लोहे के पिंजरे में भरकर 15 घण्टे तक लगातार खुले में रक्खा। धूप से बचाव का भी कोई उपाय नहीं था। सभी बंधकों को एक रस्सी से इकट्ठा बांधा हुआ था। साधुओं के नंगे शरीर पर चूना छिड़कवाकर धूप में खड़ा कर दिया, जिससे चूना कठोर होकर चमड़ी को फाड़ दे। इसी महिला के कारण दण्ड स्वरूप भारतीयों के घरों में बिजली-पानी की सप्लाई बन्द कर दी। भारतीयों के घरों से पंखे उतार कर ब्रिटिश लोगों को मुफ्त में दे दिये। खेतों में काम कर रहे सभी पुरुषों पर विमान से बम बरसाये गये।

ऐसे जुल्म करने वाले डायर को ब्रिटिश लोगों ने उस समय के 26317 पौंड की राशि तथा जवाहरात जड़ित तलवार भेंट करके सम्मानित किया। परन्तु जालियांवाला बाग में मृत व्यक्ति के परिवार को केवल 500 रुपये दिये गये।

भारतवासियों के प्रति इतनी निर्दयता का व्यवहार करने वाले डायर को सम्मानित करने वाले अंग्रेजों की अवैज्ञानिक भाषा और लिपि से प्रेम करने वाले तथा उनकी वेशभूषा, खानपान, रहन-सहन, को जो भी भारतीय अपनाता है तथा स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करता है, वह व्यक्ति भारतीयता के प्रति गद्दारी करता है। ऐसे व्यक्ति के हृदय मे देश प्रेम अथवा स्वाभिमान का रत्तीभर भी स्थान नहीं होता।

16. अंग्रेजों ने भारत पर शासन करते समय यहां की श्रेष्ठतम मूर्तिकला, स्वर्ण रजत की दुर्लभतम मुद्रायें, अद्भुत चित्रकला, लाखों पाण्डुलिपियां, मूल्यवान् स्वर्ण और रत्नजड़ित पात्र तथा शस्त्रास्त्र आदि लूटकर लन्दन सहित सारे इंगलैंड को धन दौलत से भरपूर कर दिया। ये अमूल्य सम्पत्ति भी पुन: भारत में वापिस आ सकती है, जब इंगलैंड पर भारत का शासन हो और भारत अधिकारपूर्वक अपनी लूटी हुई सम्पत्ति को पुन: प्राप्त करने में समर्थ हो सकता है। परन्तु यह बात निकट भविष्य में सम्भव नहीं है, क्योंकि हम भारतीय लोग अभी तक अंग्रेजों के मानसिक दास बने हुए हैं। यदि भारतीय जन स्वाभिमान को जागरित करें तो भारत भी विदेशों में शासनकर सकता है। **चक्रारपंक्तिरिव गच्छाति भाग्यपंक्तिः**। गाड़ी के पहिये की भांति सबका भाग्य भी ऊपर नीचे होता रहता है, इसी कारण भारत भाग्य भी कभी इंगलैंड पर हावी हो सकता है।

सन् जून 1975 में लगाये गये—

आपातकाल का एक कटु अनुभव

(सेवानिवृत्त) मेजर रतनसिंह यादव, जखाला, रेवाड़ी

1. चुनावी हार और इलाहाबाद उच्च न्यायालय के आदेश से खार-खाये बैठी श्रीमती इन्दिरा गांधी का अहंकार देश पर आपातकाल का कहर बनकर टूटा। नागरिकों के समस्त अधिकार छीन लिये गये, उसके विरुद्ध कोई अपील नही; कोई दलील नहीं। प्रत्येक अदनासा सरकारी कर्मचारी भी स्वयं को इन्दिरा गांधी का अवतार समझकर सामान्य जनता को मक्खी-मच्छर की भांति समझने लग गया था। बिना जांच पड़ताल किये अथवा बिना आयु देखे अन्धाधुन्ध नसबंदी की जा रही थी। अस्सी वर्ष के साधु की भी जबरन नसबन्दी कर दी गई, क्योंकि निश्चित संख्या में नसबन्दी के उदाहरण सरकारी कर्मचारी को भी प्रस्तुत करने पड़ते थे।

2. उन्हीं दिनों की एक घटना मुझे भुलाये से भी नहीं भूलती। मैंने सन् 1962-63 की इमरजेंसी में घर के पास की शिक्षक जैसी आराम की नौकरी को त्यागते हुए सेना में भरती होने के लिए अपना नाम प्रस्तुत किया था। परन्तु वह तो चीन द्वारा भारत पर आक्रमण से उत्पन्न देश पर आये तात्कालिक संकट का परिणाम वाला आपातकाल था।

3. मैं सन् 1975 में आपातकाल के दौरान ही सेना से आकस्मिक अवकाश लेकर 10 दिन के लिए घर पर आया हुआ था। कनीना से कोसली जाने वाली हरियाणा राज्य परिवहन की बस में यात्रा के दौरान मेरी सीट के साथ वाली सीट पर बगल में एक वृद्ध महिला भी बैठी थी। वृद्ध महिला को टिकट नहीं दी। बुढिया ने दो-तीन बार टिकट मांगी तो कण्डक्टर ने उसे डांटते हुए कहा- ''चुपचाप पड़ी रह''। इस पर मैंने कण्डक्टर से कहा-आप बूढी अम्मा को टिकट क्यों नहीं देते? ''तो कण्डक्टर का गुस्सा बुढिया को छोड़कर मुझ पर टूट पड़ा। मुझसे बोला-''तेरा टिकट दिखा''। मैंने कहा-''अभी-अभी तो लिया है''। इस पर और अधिक अकड़कर कण्डक्टर ने मेरा कालर पकड़ लिया और चिल्लाया-''टिकट दिखा।'' मैं भी ठहरा फौजी, उसका भी कालर पकड़ लिया और अपना टिकट दिखाया तो उसने टिकट फाड़कर चलती बस में से बाहर फैंक दिया और मुझे हिलाते हुए बोला-''टिकट दिखा''।

सब यात्री सहमे, डरे हुए थे कि सरकारी कर्मचारी जो यमदूत बना हुआ था, उससे पंगा क्यों ले। कोसली पहुंचकर ड्राईवर से कण्डक्टर बोला-बस को सीधे थाने में ले चलो। इस फौजी की अक्ल ठिकाने लगाऊंगा। बस जब कोसली अड्डे पर रुकी तो तीन चार सवारियों ने उसे समझाया-क्यों अन्याय करने पर उतारू हो रहा है। इस फौजी का क्या कसूर है? इसने तो टिकट ली थी। बुढिया से भी तूने पैसे लिये, पर टिकट नहीं दी। ड्राइवर कुछ समझदार था उसने मुझे चले जाने को कहा। तब मुझे एहसास हुआ कितना बुरा होता है: आपातकाल। इंदिरा जी के लिए, उनके परिवार के लिए, उनके चमचों के लिए, सरकारी चपरासी तक के लिए सुखद काल था, शेष सामान्य जनता के लिए घोर आपत्तिकाल।

हृदयरोगों के कारण, बचाव प्राथमिक उपचार

मानव शरीर एक जीवन्त मशीन है। हमारा दिल मजबूत माँसपेशियों का पम्प है। यह बिना रुके सारा जीवन काम करता है। इसके बन्द होते ही जीवन का अन्त हो जाता है। शिक्षा और चिकित्सा तथा जीवन के साधन कई गुणा बढ़े, फिर इतने रोग क्यों बढ़े ? इनके मूल कारणों पर गम्भीर चिन्तन करने की जरूरत है। हार्ट के रोगों से रोज कीमती जीवन देखते-देखते चले जाते हैं। अत्यन्त परिश्रमी और निष्ठावान् विशेषज्ञ भी बेबस हो जाते हैं। बहुत बार रोगी समय रहते हार्ट स्पेस्लिष्ट के पास नहीं पहुँच पाते, क्योंकि सेहत के विषय में जनता बहुत कम जागृत है ? जब जीने के साधन कम थे, वैदिक काल में मानव की औसत आयु सौ वर्ष मानी है। आज हृदय रोगों का इलाज जनसाधारण की पहुंच से बाहर है। इस पत्रक द्वारा कारणों को जानकर रोगों से बचाव का रहेगा।

❖ हम आलसी हैं, लापरवाही भी कर देते हैं। थोड़े साधनों के साथ जीने के ढंग बहुत कम व्यक्ति जानते हैं। बिमारियां आती कम हैं, खरीदी जाती हैं। कैसे:- बिना भूख के समय वे समय भोजन करना तथा सही तरीके से ना करना-कम चबाना-घूटकर खाना-तेज मशाले-भारी और बिगाड़ कर खाना-रिफाइन वस्तुवों का सेवन, अधिक नमक का प्रयोग, बिना आवश्यकता के चाय (दस हानिकारक तत्त्व हैं) कौफी, तम्बाकू-शराबादि नशीले पदार्थों का प्रयोग हर रोज महमानों की सेवा के नाम से हम कर रहे हैं। सभी तरह के प्रदूषण, रासायनिक खाद-खेतों में जहरीले स्प्रे, बन्द खिड़की-प्रर्दे-मिलावटी खान-पान, प्लास्टिक-अलमीनियम के बर्तन, मन्दिर आदि के निकट बिना ढके प्रसाद का सेवन, व्यर्थ के आडम्बर जैसे रात्री जगराते आदि शारीरिक व मानसिक तनाव से बहुत हानि होती है।

जनता को जिम्मेदार लोगों और राजनीति करने वाले लोगों से पूछना चाहिये कि पटाके, शराब-तम्बाकू के परमिट क्यों देते हो जबकि 95 प्रतिशत जनता नहीं चाहती ? पहले लोगों को बीमार करो, फिर हस्पताल खोलो, क्या ये नीतियां कल्याणकारी हैं ? श्रम ना करना-अत्याधिक श्रम, मोटापा, बी०पी०, पेट गैस, धमनियों की सिकुड़न, छाती के रोग, गुर्दे के रोग, नींद की गड़बड़ी, तंग पहनावा, एम्यूनिटी कमजोर होना-अति क्रोध, नकारात्मक विचार, कच्ची भस्मों का सेवन, फैक्टरियों में बचाव के साधनों की कमी, संयम-ब्रह्मचर्य के महत्त्व को लोग भूले हैं। सभी तरह की औषधियों का अति प्रयोग हानिकारक है। व्यायाम करने के सही नियमों को जानकर करें। नशों के व्यापारी, उनके सहयोगी तथा मिलावट करने वाले राष्ट्र के गद्दार हैं।

❖ **साधारण पहचान:**- सांस फूलना, अत्यन्त थकावट, छाती में तेज दर्द-दबाव-भारीपन-जकड़न माथे पर पसीना-चेहरे पर पीलापन-**बांई तरफ** के किसी के किसी भी अंग में दर्द होना या छाती के बीच में होना, सुन्नापन झनझनाहट चक्कर आना, गैस उल्टी बेचैनी आदि। रक्त में छोटी गांठ बनना।

❖ **बच्चों में:**- नीलापन-विकास ना होना, बार-बार निमोनियां होना, सुस्त रहना-कमेड़े-दौरे-फिटस आदि आना।

❖ **बचाव:**- लेटकर या बैठकर बदन ढीला करें, मन व शरीर को पूर्ण विश्राम दें। तुरन्त हस्पताल ले जायें। पीड़ित को साफ हवा में रखें, कपड़े-जूते ढीले करें। नीचे जो उपलब्ध साधन हो वो करें।

1. दिल की धड़कन मन्द हो तब गोलाई में हार्ट पर हाथ फेरते रहें। पेट पर ठण्डे जल में कपड़ा भिगो निचोड़ कर रखें।

2. रीढ की नसों की मालिस हल्के हाथ से करें। धड़कन बन्द हो गई हो तो तुरन्त एक मिनट में 100 बार 5-6 सेण्टीमीटर छाती को दबाना चालू रखें। दिल अधिक धड़के तो ठण्डे जल में कपड़ा भिगोकर रखते हैं-बदलते रहें। विशेषज्ञों के अनुभव हैं हृदय- 4 मिनट में काम करना शुरू कर सकता है।

3. दो-तीन तुरी (फांक) लहशुन की खिला दें, ऊपर से पानी या दूध दें या लहशुन रस दें या प्याज का रस 30 ML पिला दें।

4. विशेष:- गाय या सांड का 25-30 ML मूत्र जल मिला पिलाने से रक्त, ग्रन्थि पिंघलने की आशा है।

5. सम्भव हो-आमला-सेब-संतरा-अंगूर आदि का जूस सेवन करायें। हर तरह के ठग्गों से बचो।

6. दिल की ताकत हेतु:- अर्जुन की छाल या पत्तों का 3 या 4 ग्राम चूर्ण गाय या बकरी दूध से कई मास लें।

7. हृदय की कमजोरी या तेज धड़फन के लिये बीह का मुरबा धोकर 15-20 ग्राम खाली पेट 1-2 मास लें शीतल है पौष्टिक है 1 या 10 ग्राम इसके बीज पानी में भीगो छानकर मसलकर सेवन करें।

8. सेब-आमले का मुरबा धोकर सेवन करें। भोजन से पहले लें। कब्ज में भी लाभकारी है।

9. दिल की शक्ति हेतु मोति भस्म 250 ग्राम गाय-बकरी की मलाई से लेते रहें।

10. थकावट में पूर्ण विश्राम करें, आसन भी ना करें। प्राणायाम की जगह सिर्फ गहरे लम्बे श्वास ही प्रात: सायं साफ हवा में लें।

11. हर आसन में 3 से 5 सेकण्ड लगने चाहियें। कुछ सेकेण्ड रुककर अगला आसन करें।

12. हार्ट सबल के लिये आसन-पवनमुक्तासन-हलासन-गोमुखासन-नौकासन तथा दोनों हाथों को दीवार या मेज पर ऊपर-नीचे रखकर तीन बार दबाया करें।

13. दो या 3-4 KG की मोगरी (गदा) दोनों हाथों से पकड़ अपने सिर के ऊपर से जीरो दायँ-बायँ दो बार बनायें।

14. तनावमुक्त रहने का अभ्यास जीवन भर करते रहें। अच्छा साहित्य पढ़ें।

पत्रका का लेखक सन् 1960 से इस क्षेत्र में कार्यरत है। मेरे दिल की धड़कन प्रात: 54 प्रतिमिनट है। सामान्य-70 से 80 तक ठीक मानते हैं। जितना हो प्रकृति के निकट रहें। सादा खाना-अंकुरित अन्न लिया करें। जहरमुक्त खेती में सहयोग करें। धीरे-धीरे 24 घण्टे में 40-50 गहरे श्वास लिया करें।

निवेदक
देवीसिंह आयु० स्नातक-बुआना-लाखू (पानीपत)
मोबाइल:- 9996316318

भजन संग्रह

काग़ज के फूल

सब बात बनाने वाले हैं,

मैं करके सिद्ध दिखा दूंगा, जन-मन बहलाने वाले हैं।
क्या धरा जगाने में उसके जिसका उत्तम व्यवहार नहीं?
क्या धरा उठाने में उसके जिसका सम्यक् आचार नहीं?
क्या धरा पढ़ाने में उसके जिसका निज पर अधिकार नहीं?
क्या धरा सुनाने में उसके, जिसकी अन्तर चीत्कार नहीं?
मिलती जग में टनभर शिक्षा कणभर अपनाने वाले हैं।

सब बात बनाने वाले हैं।।

शोषण से संग्रह कर निशदिन नैतिकता के गायन गाते,
स्वार्थों से इंच नहीं हिलकर भी विश्वसुधारक कहलाते,
श्रमिकों की हड्डी खून चूस बगुले से भक्त बने फिरते,
आंतड़ियां तोड़ गरीबों की फिर धार्मिक-दाम्भिकता भरते,
इन आदर्शों की छाया में निज न्याय छिपाने वाले हैं।

सब बात बनाने वाले हैं।।

मानव की आकृति पाने से क्या मानवता आ जाती है?
शासक का पद मिलने से ही क्या शासकता आ पाती है?
साधक का वेष पहनने से ही क्या साधकता आती है?
एकत्रित अक्षर करने से क्या कविता वह कहलाती है?
संयम की वेदी पर थोड़े ही पैर बढ़ाने वाले हैं।

सब बात बनाने वाले हैं।।

हर पनघट पर है प्यास नहीं, हर क्षण में नव उल्लास नहीं,
हर रजनी में नवचन्द्र नहीं, हर आशा सुख-आभास नहीं,
हर मन्दिर में भगवान् नहीं, हर नारी में सन्तान नहीं,
हर वाणी में वरदान नहीं, हर कविता में भी जान नहीं,
गुत्थी हर कोई उलझा दे, थोड़े सुलझाने वाले हैं।

सब बात बनाने वाले हैं।।

हर बादल प्यास नहीं हरता, हर धनिक प्रदान नहीं करता,
हर पुष्प पराग नहीं झरता, हर तिलक सुहाग नहीं भरता,
हर नूपुर में झंकार नहीं, हर धनुष में टंकार नहीं,
हर गायन में गुंजार नहीं, हर कवि कविता-भंडार नहीं,
हर मुनि का सद् आचार नहीं, बहु ढोंग दिखाने वाले हैं।

सब बात बनाने वाले हैं।।

-प्यासा पनघट स

गुरुकुल झज्जर में छात्रों के प्रवेश हेतु सूचना

सभी अभिभावकों को सूचित किया जाता है कि महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से सम्बद्ध आर्षपाठविधि के नि:शुल्क शिक्षण केन्द्र महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर में विद्याध्ययन हेतु नूतन छात्रों का प्रवेश प्रारम्भ हो चुका है। जिन्हें अपने बालकों को विद्वान्, चरित्रवान्, बलवान्, माता-पिता के प्रति श्रद्धावान्, देशभक्त और विवेकशील बनाना अभीष्ट हो वे अपने बच्चों को अवश्यमेव प्रविष्ट करायें।

* प्रवेश हेतु परीक्षा तिथियां इस प्रकार हैं-
  17 जून 2018 (तृतीय रविवार)
* प्रवेशार्थी छात्र कम से कम पंचम कक्षा उत्तीर्ण और अविवाहित हो।
* प्रवेश शुल्क - 2000 रुपये (केवल एक बार)
* भोजन शुल्क - 18000 रुपये वार्षिक। यह शुल्क प्रति छ: मास के बाद नौ हजार रुपये के रूप में भी दिया जा सकता है।
* विद्यालय आवासीय है, आवास, बिजली, पानी और अध्यापन का कोई शुल्क नहीं है। परीक्षा के बाद केवल दस दिन का अवकाश होता है। शेस जानकारी हेतु सम्पर्क करें-

सम्पर्क सूत्र
9416055044 (आचार्य)
9416601019 (कार्यालय)

आर्ष कन्या गुरुकुल नरेला (दिल्ली) में प्रवेश आरम्भ

सभी सज्जनों को सूचित किया जाता है कि स्वामी ओमानन्दजी सरस्वती द्वारा स्थापित आर्ष कन्या गुरुकुल नरेला (दिल्ली) में नवीन छात्राओं का प्रवेश प्रारम्भ हो चुका है।

प्रवेश योग्यता	-	छात्रा कम से कम पंचम कक्षा उत्तीर्ण हो।
प्रवेश शुल्क	-	2000 रुपये केवल एक बार।
भोजन शुल्क	-	12000 रुपये वार्षिक
प्रवेश तिथियां	-	17 जून 2018 (प्रथम रविवार)
		24 जून 2018 (अन्तिम रविवार)

प्रवेश केवल छठी कक्षा से नवम कक्षा तक ही होगा। शेष जानकारी हेतु सम्पर्क करें।

सम्पर्क सूत्र- 9999299300 (सोमवीर शास्त्री)
9891640296 (कार्यालय)

महर्षि दयानन्द की अमर वाणी

लेखक:- धर्मपाल आर्य 'धीर' शास्त्री (आर्य समाज भाण्डवा)

● सच्चाई को पकड़ने और झूठ को छोड़ने के लिए सदा तैयार रहो।

● जिस काम को करते समय भय, शंका और लज्जा का भाव मन में आये वह मत करो। यह परमात्मा की आवाज है।

● जब दो भाई आपस में लड़ते हैं तो तीसरा पंच बनकर आता है और उनको लड़ाता रहता है।

● हजारों मूर्खों के बदले एक अकेले वेदों के विद्वान् और निष्पक्ष की बात माननी चाहिये। सच्चाई व झूठ का फैसला गिनती के आधार पर नहीं होता।

● जो जितना बड़ा (समर्थ) है उसको उतना ही अधिक दण्ड मिलना चाहिये।

● विद्या और धर्म के काम पहले करने में कठिन होते हैं और उनका फल मीठा होता है।

● जिसके अच्छे कर्म ज्यादा हों वह अगले जन्म में भी मनुष्य बनता है।

● वेद पढ़ने का जनेऊ लेने का अधिकार सबको है।

● सुख का नाम स्वर्ग और दुख का नाम नरक है, ये धरती पर ही हैं।

● पहले अपने दोषों को देखकर उनको निकालने के बाद दूसरों के दोषों को देखकर दूर करने का यत्न करो।

● जवानी की अवस्था में ज्यादा देर तक एकान्त में बेटी, बहन और माता के साथ भी नहीं बैठना चाहिए।

● 'मनुष्य वही है जो सोचकर काम करे, दूसरों के सुख-दुख को अपना सुख-दुख समझे। पापी से न डरे, चाहे वह पापी कितना भी बलवान् क्यों न हो फिर भी अपने सामर्थ्य के अनुसार उसका विरोध करे'।

● सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार कर करने चाहिएं।

● सबको अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिए अपितु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

● सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

● एक ईश्वर की ही उपासना करनी चाहिए।

आर्य मान्यतायें:-

● भारत देश आर्यों ने बसाया था, इसका सबसे पुराना नाम आर्यावर्त था, हमारे पूर्वज राम, कृष्ण आदि आर्य थे।

● ऊँचा व नीचा जन्म से वह खानदान से नहीं होता, अपने कर्मों से होता है।

● जाति-पाति और छूआ-छूत ठीक नहीं है। हम सब की जाति मनुष्य है। जिसमें कमी हों वही कमीण और जिसके कर्म नीच हों वही नीच है।

● वेदों में मूर्तिपूजा नहीं लिखी, बेजान पत्थर प्रार्थना नहीं सुन सकता, न कुछ दे सकता है।

● हमारा जन्म पहले भी था और आगे भी होगा।

● जो-जो बातें वेदों में लिखी हैं या वेदों के अनुसार हैं वे-वे ठीक हैं और जो-जो वेदों में नहीं लिखी या वेदों के विरुद्ध हैं वे-वे गलत हैं। अन्य पुस्तकों में लिखी हुई बातें झूठी भी हो सकती हैं।

● जिसका जन्म हुआ उसकी मौत और जिसकी मौत हुई उसका जन्म अवश्य होगा-यह महाराज कृष्ण का वचन है।

● गीता में श्री कृष्ण की साफ जबानी पढ़ो कि किये गए अच्छे या बुरे कर्म का फल जरूर भोगना पड़ेगा।

भ्रांति निवारणः-

● उपवास (बरत) से इच्छायें पूरी नहीं होंगी, शारीरिक लाभ है।

● गुरुओं का गुरु परमात्मा है। गुरु परमात्मा से बड़ा नहीं होता। गुरुओं का झूठा खाना, थूक चाटना, पैरों का धोवण पीना, नारियों के द्वारा गुरु के पैर दबाना पाप है। तथाकथित गुरु अधिकतर दुराचारी हैं।

● बन्दर से आदमी नहीं बना। हनुमान् बन्दर नहीं था, मनुष्य था।

● महाभारत में राधा का नाम भी नहीं है। कृष्ण पर लगाए गए चोरी आदि के आरोप झूठे हैं।

● गंगा शिवजी के सिर से नहीं निकली थी, शिवालक की पहाड़ियों से निकलती है जहां पहले शिवजी का राज्य था।

● शिवजी के झण्डे का निशान बैल, कार्तिकेय के झण्डे का निशान मोर तथा गणेश के झण्डे का निशान चूहा था। ये उनकी सवारियां नहीं थी।

● हनुमान् विमान से लंका में गया था, पक्षियों की तरह उड़कर नहीं जा सकता। विमान से जाने को उड़ना ही कहते हैं। जैसेः अंग्रेजी में भी- He flew to London.

● झूठा खाने से प्रेम बढ़ता तो कुत्ते आपस में क्यों लड़ते-''झूठ मनु ने बुरी बताई, मत खाओ भाई की भाई''

● बैल के सींग पर धरती नहीं खड़ी।

● अमेरिका का नाम पाताल है।

● जो जीते जी अपने पतिव्रत धर्म पर रहे उसको सती कहते हैं।

● राम के द्वारा शम्बूक वध करने की कहानी प्रक्षेप (मिलावट) है। राम तपस्वियों का सहायक/रक्षक था।

● मूर्तिपूजा लगभग तीन हजार साल पहले चली है, सनातन नहीं।

● गंगा में नहाने से पाप नहीं कटते अपितु बढ़ते हैं, पाप कभी माफ नहीं होते, कर्म फल भोगना पड़ता है।

● मरे हुओं को भोजन नहीं पहुँचता, जीते माता-पिता की सेवा करना ही श्राद्ध और तर्पण है।

● द्रौपदी के पाँच पति नहीं थे। महाभारत में झूठी कहानी बनाकर बाद में मिलाई गई है।

● राम ने सीता को घर से नहीं निकाला, रामायण में यह मिलावट है।

गऊ और कन्याः-

● गऊ, कन्या की हत्या महापाप है।

● गऊओं का पालन करो, बछड़ी-बछड़े मत छोड़ो।

● गऊ छोड़ने वालों पर दण्ड लगे।

● गाय के दूध में प्यार, बुद्धि बढ़ने के गुण और चुस्ती है और भैंस के दूध में बैर, सुस्ती तथा वायुरोग है।

● जीना चाहते हो तो गाय पालो और गोबर की खाद का प्रयोग करो।

● गऊ और कन्या के हत्यारों को मौत की सजा मिलनी चाहिए।

● वेद, शास्त्रों में लड़का-लड़की होने के उपाय लिखे हैं। पाखण्डियों की बभूती से और किसी की छान (फूंकने) से सन्तान नहीं होती। भ्रूणहत्या महापाप है।

● जिस घर में स्त्रियाँ रोवेंगी उनका ऊँटमटीला हो जाएगा।

● कन्याओं की शिक्षा बहुत जरूरी है। मानव मात्र को पढ़ने का अधिकार है।

● लड़के और लड़कियों के विद्यालय अलग-अलग हों।

धर्म-उपदेश (विविध व्यावहारिक वचन):-

● जीव हत्या पाप है, सबको जीने का अधिकार है। मांस मनुष्य का भोजन नहीं है, अण्डे व मछली खाना भी पाप है।

● मांसाहारियों के हाथ का बनाया भोजन न खाओ।

● बीड़ी, हुक्का, सिगरेट नुकसान करते हैं, तम्बाकू में जहर है।

● चाय, काफी, कोका, कोला, पेप्सी, चुटकी, जर्दा तथा पान मशाला आदि का सेवन मत करो।

● शराब पापों की जड़ है, शराब बेचने वालों का जाति-बहिष्कार करो।

● ताश, चौपड़ व जुआ मत खेलो।

● सांग व नाच से बचो।

● अच्छी पुस्तकें पढ़ो।

● इश्किया नावल व गन्दी रागनियों की किताब न पढ़ो।

● गन्दे गीत न गाओ, न सुनो।

● अपने घरों में सिनेमा के गन्दे फोटो न लगाओ, ऋषियों व देशभक्तों के फोटो लगाओ।

● अपने घरों पर ओ३म् का झण्डा लगाओ।

● चित्र-पूजा छोड़कर चरित्रों की पूजा करो।

● गाली मत दो, सोचकर बोलो।

● बोलो-बको मत, खाओ-छको मत, देखो-तको मत।

● दहेज की मांग मत करो, नाच व दिखावा बन्द करो।

● मम्मी पापा छोड़ो, माता-पिता बोलो।

● बड़ों का आदर करें, नमस्ते कहें, इससे आयु, विद्या, यश और बल बढ़ेगा।

● परीक्षा में नकल मत करो।

● बड़ों के अच्छे चाल-चलन की नकल करो, उनकी कमियों को मत पकड़ो।

● माता-पिता की सेवा करो।

● माता-पिता चाहे कैसे भी हों उनकी सेवा करना सन्तानों का जरूरी धर्म है।

● दूसरे के धन को धूल समझो।

● पराई नारी माता, बहन और बेटी के बराबर होती है।

● सब सुधारों का सुधार ब्रह्मचर्य है।

● बचपन की शादी बरबादी है।

● भड़कीला व तंग पहनावा न पहनें। सादगी सदाचार की जननी है और श्रृंगार व्याभिचार का दूत है।

● सवेरे उठकर व्यायाम व सैर करो। व्यायाम किये बिना भोजन मत करो।

● परहेज के बिना रोग नहीं छूटता।

● संध्या के समय सोने से हानि होती है, दक्षिण की तरफ पैर करके सोने से बुद्धि आयु घटती है।

● जनेऊ व चोटी को बचाओ।

● हवन करो, पेड़ लगाओ। इससे वातावरण शुद्ध होगा, रोग दूर होंगे, समय पर वर्षा होगी।

● जैसा संग वैसा रंग। आर्य सत्संग में बैठो ''सत्संग जैसा लाभ नहीं और कुंसग जैसी हानि ना''-दादा बस्तीराम

● संगति से आदमी की पहचान होती है कि वह कैसा है।

● जैसा खाये अन्न वैसा बने मन। जैसी पीवे दूधी वैसी होज्या बुद्धि।

● यथासम्भव स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग करें।

● पत्र व्यवहार में, हस्ताक्षर में, मकान, दुकान आदि के नाम में अपनी मातृ-भाषा हिन्दी का प्रयोग करो।

● निमन्त्रण-पत्र पर गणेश का ऊकचूक सूण्डल चित्र न छपवाकर ईश्वर का मुख्य नाम 'ओ३म्' व अवसरानुकूल वेदमंत्र लिखवायें।

● अपनी ड्यूटी में समय का पालन करो।

● बाहर जाने से पहले घर वालों को बताकर जायें।

● यथासम्भव यात्रा में अकेले न चलें। खाली हाथ व खाली जेब भी न चलें। टिकट लेकर यात्रा करें।

● आलस्य, क्रोध और चिन्ता छोड़ो।

● जो उत्तम काम करना हो वो आज ही कर डालो कहीं ऐसा न हो कि काल तुम्हें निगल जावे। मृत्यु इस बात की प्रतीक्षा नहीं करती कि तुमने कोई काम पूरा किया है या नहीं।

● कार्य करने से पूर्व सम्भावित बाधाओं को हटाने के उपायों का विचार करना चाहिये।

● अपने वचन का पालन करो। वचन हानि करने वालों का कोई विश्वास नहीं करता।

● किए हुए उपकार का अहसान मानो अर्थात् कृतज्ञ बनो। कृतघ्न का उद्धार नहीं हो सकता।

● धर्मपूर्वक धन कमाओ व अपनी कमाई का दसवां हिस्सा धर्म में लगाओ।

● सुपात्र को दान दो, ठगों को और बुरे कामों में दान मत दो। बेईमानी का दान मत लो।

● गरीब व शरीफ की सहायता करो।

● पक्षियों के लिए दाना डालो, पानी धरो तथा गाय व कुत्ते आदि को रोटी दो।

● कर्जा देकर मूलधन के दुगने से फालतू लेने में पाप है अर्थात् सौ के दो सौ से ज्यादा न ले।

● जो दूसरों के लिए खाई खोदता है खुद भी उसमें पड़ता है। इतिहास साक्षी है कि जो अपनों को मरवाने के लिए शत्रु को बुलाता है तो वह (विरोधी) उसको मारने के बाद बुलाने वाले को भी मार देता है।

● शिक्षा का छोटी उम्र में अधिक असर पड़ता है और जन्म से पहले सबसे अधिक प्रभाव होता है। माता के खान-पान, देखने, सुनने और सोचने का भी असर सन्तान पर पड़ता है।

● ज्यादा लाड-प्यार से सन्तान बिगड़ते हैं।

● अच्छे पिता की सन्तान बुरी और बुरे पिता की सन्तान अच्छी बन सकती है। इसमें पूर्व जन्म के संस्कार व संगति कारण है।

● झूठे से सावधान रहो। झूठी चासने वालों की एक पहचान यह है कि वे कहेगें-'मेरा नाम मत लेना, मैंने सुना था'।

● कपट से पूछने वाले को उत्तर मत दो।

● धन की ठगाई, अपने दिल का दुख तथा घर की समस्याएं सबको मत बताओ।

● पराई गलत सीख पत्थर जैसी पक्की यारी को भी तुड़वा देती है।

● गलत बात किसी की भी नहीं माननी चाहिये। अधर्म के कामों में भाई व मित्रों की भी सहायता मत करो।

● वह घर उजड़ जाता है जहां सब नेता हों।

● ऐसा कोई व्यक्ति नहीं मिलेगा जिससे सब खुश हों।

● जैसा बोओगे वैसा काटोगे। कंकर बोकर धान नहीं पा सकते ''बोए पेड़ बबूल के तो आम कहाँ से खाय।

● दूसरों के साथ वैसा ही बर्ताव करो जैसा खुद के लिए दूसरों से चाहते हो अर्थात् यदि तुम चाहते हो कि हमारी बहन-बेटियों को कोई भी खोटी नजर से न देखे तो हमारा भी फर्ज है कि हम भी किसी को न तकें।

● काँच के महल में बैठकर दूसरों पर पत्थर नहीं फेंकना चाहिए।

● गाली, चोरी और झूठे इलजामों का बदला गाली, चोरी और झूठे इलजाम लगा करके मत निकालो। यदि शक्ति हो तो उन दुष्टों को दण्ड दो अन्यथा भगवान् के न्याय पर छोड़ दो, वह न्यायकारी है। न उसके घर में देर है और न ही अन्धेर है।

● हक पर लड़ो। पर धन धूल समान समझो। अन्यायी चाहे ताकतवर भी हो, उससे नहीं डरना चाहिये।

● पहले छेड़ो मत और बाद में यदि ताकत है तो पहले छेड़ने वाले को छोड़ो मत क्योंकि काँटों और दुष्टों का एक ही उपाय है कि या तो उनसे बचें या उनको जूतों से रगड़ दो।

● वैदिक संस्कृति ही भारतीय संस्कृति है। भारत की संस्कृति का विरोध करने वाले देश

के प्रछन्न शत्रु हैं। उनका सब प्रकार से सर्वत्र विरोध करो।

● जो दूसरों के सुख को देखकर सुखी और दूसरे के दु:ख को देखकर दुखी होता है वह अच्छा आदमी है और जो दूसरे के सुख को देखकर दुखी और दुख में सुखी होता है वह बुरा आदमी है।

● दुष्ट का जबान से भी सत्कार न करो।

● अच्छे आदमी मन-वचन कर्म से एक होते हैं और बुरे आदमी मन में कुछ सोचते हैं, जबान से कुछ और कहते हैं और करते कुछ और हैं।

● चाहे अपना काम बने या नहीं परन्तु किसी भी बुरे आदमी से सहायता नहीं लेनी चाहिये।

● रावण, कंस व दुर्योधन जैसे राक्षसों का विरोध करना ही राम और कृष्ण की पूजा है।

● अच्छे आदमियों को राजनीति में हिस्सा लेना चाहिए।

● जैसा राजा वैसी प्रजा।

● इस समय बुरे आदमियों में एकता है और भले आदमियों का संगठन नहीं है इसलिए राक्षस प्रभावी होते जा रहे हैं और बुराई का दबदबा बढ़ता जा रहा है।''

● वर्तमान समय की पुकार है कि- ''संसार के श्रेष्ठ पुरुषो! एक हो जाओ

सम्भा जी (शिवाजी का पुत्र) का दु:खद अन्त

लेखक:- आनन्ददेव शास्त्री, पूर्व प्रवक्ता, (संस्कृत) दिल्ली सरकार

शिवाजी अपने अन्तिम दिनों में, अपने विजय उद्योगों से संतुष्ट थे, परन्तु महाराणा प्रताप की तरह शिवाजी का अन्तिम समय भी भविष्य की चिन्ताओं से अन्धकारमय हो गया था। युवराज सम्भा जी वीरता में अपने पिता की प्रतिमूर्ति होते हुए भी, चरित्र तथा स्वभाव में पिता से बिल्कुल विपरीत था। अमीरी के वातावरण में पैदा होने से सम्भा जी में अभिमान तथा क्रोध की मात्रा बहुत अधिक थी। वहीं कुछ समय मुगल दरबार में रहने के कारण शराब तथा विषयासक्ति की आदत ने भी घर कर लिया था। शिवाजी प्राय: उसे ताडते तथा समझाते रहते थे। दण्ड के रूप में उसे बाद में पन्हाला के किले में बन्द कर दिया गया। अदूरदर्शी युवराज चिढ गया तथा जब शिवाजी बीजापुर में मुगलों से जूझ रहे थे, मुगल सरदार दिलेरखां के सम्पर्क के कारण अपने पक्ष को छोड मुगलों के पक्ष में चला गया। औरंगजेब ने उसे सम्मानित कर, सेना में सात हजारी की पदवी दे दी तथा दिलेरखां की अध्यक्षता में लडने की स्वीकृति दे दी। तब सम्भा जी ने बडी वीरता दिखाई तथा मराठों से भूपालगढ का किला छीन लिया। क्योंकि मराठा किलेदार शिवाजी के पुत्र से लडूं या न लडूं इसी दुविधा में पडा रहा। तब शिवाजी ने उस किलेदार को तोप से उड़वा दिया।

शीघ्र ही सम्भा जी को भी जाति-द्रोह का फल मिल गया। औरंगजेब सम्भा जी पर सन्देह की दृष्टि रखने लगा तथा उसने दिलेर खां को आदेश दिया कि सम्भा जी को कैद करके दिल्ली भेज दिया जाय। दिलेरखां एक बहादुर सिपाही था, उससे मित्रद्रोह नहीं हो सकता तथा उसने सम्भा जी को इशारा देकर भगा दिया तथा वह शिवाजी के पास वापिस चला गया, किन्तु शिवाजी ने उसे अविश्वसनीय समझकर पन्हाला के किले में बन्द कर दिया।

शिवाजी ने भी राजनैतिक लाभ के लिये बहुविवाह किये थे, अतः उनके अन्तःपुर में भी स्त्रियों में षड्यन्त्र चल रहे थे। हर औरत शिवाजी पर अपना अधिकार जमाना चाहती थी। पहली स्त्री साईबाई का देहान्त हो चुका था तथा उसका पुत्र सम्भा जी उद्धत होने के कारण काबू से बाहर हो चुका था। दूसरी स्त्री सोयराबाई अपने पुत्र राजाराम के लिए चिन्तित थी। शेष तीन नवयुवतियां भी इधर उधर हाथ पांव मार रही थी। उसी समय 3 अप्रैल 1680 को शिवाजी का देहान्त हो गया।

सम्भा जी को शिवाजी की अन्तिम बीमारी का पता पन्हाला के किले में मिला तथा सम्भा जी एक सांडनी पर सवार होकर शिवाजी से मिलने चले, किन्तु सम्भा जी को शिवाजी के देहान्त का समाचार तब मिला, जब वह पहाड़ के नीचे पहुंच चुका था। सम्भा जी को इस समाचार से इतना क्रोध आया कि उसने उसी समय म्यान में से तलवार निकालकर सांडनी के दो टुकड़े कर दिये तथा लोगों को आदेश दिया कि यहां पर सांडनी के धड की मूर्ति स्थापित की जाय जिससे कि ऊंटों (सांडनी) को इससे शिक्षा मिल सके।

उधर दुर्गादास के साथ औरंगजेब का बडा बेटा मुअज्जम भी सम्भा जी के पास पहुंच गया। सम्भा जी के आदमियों ने उसका स्वागत किया। सम्भा जी का स्वभाव बडा उग्र था, कुछ समय मुगलों के पास रहकर उनका दोष विलासिता भी उसमें घर कर गया था, क्रोध की मात्रा भी उसमें बढ गई थी। वह शिवाजी की मृत्यु का समाचार पूरे महाराष्ट्र में फैला, तो महाराष्ट्र के सरदारों ने सोचा कि सम्भा जी की अपेक्षा, अधिक संयमी राजा बनाया जा सके तो अधिक अच्छा है। सम्भा जी की माता मर चुकी थी। दूसरी महारानी सोयराबाई ने परिस्थितिसे लाभ उठाया। उसने बहुत से मन्त्रियों को अपने पक्ष में कर लिया तथा शिवाजी की मृत्यु के तीन दिन पीछे ही, रायगढ में अपने 18 वर्ष के युवा पुत्र राजाराम को राजगद्दी पर बैठा दिया। सम्भा जी को जब यह समाचार मिला तो वह आग बबूला हो गया। उसके पक्षवालों की भी कमी नहीं थी। उसके साथी उससे डरते थे परन्तु प्यार भी करते थे। उसने अपने आप को महाराज घोषित कर रायगढ की तरफ प्रयाण किया। पन्हाला का किला रानी के सेनापतियों के हाथ में था, परन्तु सैनिक सम्भा जी के पक्ष में थे। सैनिकों ने किला सम्भा जी को दे दिया। रानी ने जनार्दन पन्ते हनुमन्ते को सम्भा जी को रोकने के लिये भेजा परन्तु उसने असाधारण उपेक्षा बरती तथा सेना का घेरा पन्हाला के किले पर डाल स्वयं कोल्हापुर में जाकर विश्राम करने लगा। पन्ते भी लापरवाही का फायदा उठा सम्भा जी किले से बाहर निकल गया तथा कोल्हापुर पहुंच सोते हुए पन्ते को बन्दी बना लिया। कोल्हापुर तथा पन्हाला के समाचारों से रायगढ में खलबली मच गई। रानी के समर्थक सम्भा जी के साथ आने लगे। रायगढ पर सम्भा जी का अधिकार हो गया तथा रानी की योजना निष्फल हो गई। सम्भा जी में गम्भीरता का अभाव था, उसने अपने विरोधियों से भयंकर बदला लिया जो सेनापति बन्दी बनाये गये थे उन्हें किले के ऊपर से नीचे फेंक दिया गया। सूर्या जी को फांसी पर चढा दिया गया। मोरो पिंगले पेशवा तथा अन्ना जी दत्तो के घर जला दिये गये। इससे आगे उसने जो कुछ किया वह असभ्य था। गुस्से की झोंक में वह रानी सोयराबाई के अन्तःपुर में गया तथा सबके सामने उसे अपमानित किया। रानी को घर की एक दीवार में गर्दन तक चिनवा दिया गया। केवल मुख बाहर था। उसे दूध पीने के लिये दिया गया। वह इसी स्थिति में तीन दिन तडफ कर मर गई। स्मरण रहे कि किसी को या विशेष तौर से किसी स्त्री को दीवार में चिन्वाने की यह प्रथम शर्मनाक घटना थी, वैसे सरहिन्द (पंजाब)

में गुरु गोबिन्द सिंह के दो पुत्र भी दीवार में चिनवाये गये थे। रानी के 200 सहायकों को मृत्यु दण्ड दिया गया। राजाराम को सम्भा जी ने नजरबन्द कर दिया।

जब शहजादा अकबर (औरंगजेब का बडा पुत्र मुअज्जम) सम्भा जी का अतिथि बना तब अन्ना जी दत्तो ने जेल से ही उसके पास सन्देश भेजा कि सम्भा जी को गिरफतार कर सको तो महाराष्ट्र पर तुम्हारा अधिकार हो जायेगा। शहजादे ने यह बात सम्भा जी को बतादी, तब अन्ना जी तथा उनके साथियों को मौत के घाट उतार दिया। सम्भा जी का स्वभाव स्थिर न था। कभी जोश तथा कभी वह प्रमाद में डूबा रहता। सुरा-सुन्दरी के चक्कर में वह चौबीस घण्टे डूबा रहता था। मराठा सरदार उसे सावधान करते तो उन्हें सजा मिलती। कभी अकस्मात् नींद टूट जाती तो शत्रु पर आक्रमण शुरु हो जाते तथा जिधर सम्भाजी बढते उधर से शत्रु साफ हो जाते। उस विजय से सम्भाजी कोई लाभ न उठाता तथा फिर निद्रा में डूब जाता। भिन्न मानसिक दशाओं के लिये सम्भा जी के सलाहकार भी भिन्न-भिन्न ही थे। उत्साह के सिमय पुराने मन्त्री या सेनापति थे, जिन्होने शिवाजी के साथ काम किया था। जब सम्भा जी तलवार के घोडे पर चढता, तब ये लोग उसके साथ हो लेते तथा मराठे जिधर जाते सफलता उनके पैर चूमती। परन्तु जैसे ही सम्भा जी पर प्रमाद का प्रभाव होता, कवि कुलेश जैसे सलाहकार उस पर हावी हो जाते तथा पतन के गर्त में उसे धकेलते रहते। इसी कारण सम्भा जी को न तो राज्य की रक्षा कर सका तथा न ही राज्य को बढा सका।

बीजापुर तथा गोलकुण्डा के राज्यों को जीत औरंगजेब मराठों के नाश की ओर अग्रसर हुआ, परन्तु सम्भा जी सचेत न हुआ। जब औरंगजेब एक-एक स्थान को जीत आगे बढ रहा था, तब सम्भा जी अपने सलाहकार कवि कुलेश (कलश या कलुषा) की देखरेख में, संगमेश्वर के महलों में विषय भोगों में मस्त था। संगमेश्वर का स्थान, महाराष्ट्र के दुर्गों से बहुत दूर दो नदियों के संगम पर सुन्दर जंगलों से घिरा हुआ था। अभी औरंगजेब को लडने की फुर्सत नहीं है। यह सोचकर सम्भा जी दिन व्यतीत करने संगमेश्वर चला गया। वहां कुलेश के प्रयत्न से नित नई शराब तथा कामिनियां जुटाई जाने लगी। सम्भा जी विलासित में आकण्ठ डूब गया। चौमासा गुजर गया कार्तिक तथा माघ भी गुजरने लगा। परन्तु सम्भा जी को विषयभोगों से फुर्सत नहीं मिली, वह उसी असुरक्षित स्थान पर पडा रहा। उधर औरंगजेब बहुत ही चतुर व्यक्ति था। औरंगजेब ने शेख निजाम हैदराबादी को पन्हाला किले पर कब्जा करने को भेजा। कोल्हापुर में उसे सम्भाजी की विलासिता का पता चला। शेख ने थोडे से वीरों को ले जंगल के मार्ग से संगमेश्वर पर चढाई कर दी। घुडसवार दिन रात यात्रा करके जब संगमेश्वर पहुंचे उस समय शिवाजी का उत्तराधिकारी, एक मराठा सरदार की नव विवाहिता सुन्दर पत्नी पर रास्ते में डाका डालने गया। उस समय कवि कुलेश ही उसका सबसे बडा मित्र था। यह उत्तर भारत का था, इसलिये मराठे सरदार इसके विरुद्ध थे। सम्भा जी का घर तथा दरबार शत्रुओं से भरा पडा था नाश में अब कोई कसर न थी। दिसम्बर के अन्त में संगमेश्वर में शेख के घुडसवार दिखाई दिये। पहरेदार भागकर महल में आये तथा राजा को जगाने लगे। सारी रात विलासिता के कारण वह बडी कठिनाई से जगाया जा सका तथा उठते ही उसने उठाने वालों को भला बुरा कहा तथा दूतों को कहा यह समाचार कुलेश को बताओ। वह जादूगर है तथा शत्रुओं को अकेला ही भगा देगा। इतने पर भी जब दूत उसे जगाने में लगे रहे तो उन्हें अपने शरीर रक्षकों द्वारा धक्के देकर भगा दिया। तथा अधिकारियों के प्रयत्न से भी नहीं जागा।

इतने में शेख निजामी के सिपाही संगमेश्वर के बाजारों में घूमने लगे। शहर में भगदड़ मच गई। सिपाही जान बचाकर रायगढ की तरफ भागने लगे। शेख निजामी बिना किसी प्रतिरोध के शहर में घुस आया तथा महल के द्वार पर पहुंच गया, परन्तु सम्भा जी नींद में मग्न सुख के सपने लेता रहा तथा यह सोच कर प्रसन्न होता रहा कि कुलेश के जादू से शत्रुओं के सिर धड़ से अलग होने लग रहे हैं।

कुलेश ने लडने का कुछ यत्न तो किया। जो सिपाही स्वामी भक्ति के कारण वहां रुक गये थे, उन्हें साथ लेकर मुगल सेना का रास्ता रोकना चाहा परन्तु आँख में तीर लगने के कारण वह अचेत होकर गिर पडा तथा बन्दी बना लिया गया। इधर शत्रु को घर में आया देखकर मराठा सिपाहियों ने जब सम्भा जी को बलात जगा दिया। कुलेश की दुर्दशा सुनकर वह कुलेश को घसीट कर मन्दिर में ले गया तथा साधु के वेश में बाहर भागने लगा। तभी शेख निजामी के लडके इकलाख की नजर उस पर पड गई, क्योंकि भेष बदलते समय वह गहने उतारना भूल गया था। उन गहनों से वह पहचान लिया गया तथा उसी भेष में पकडा गया। सम्भा जी कुलेश तथा अन्य बन्दियों को जंजीर से बांधकर हाथी पर लाद शेख निजामी ने 28 दिसम्बर 1688 के दिन औरंगजेब के शिविर की तरफ प्रस्थान किया। इस समाचार से मुगलों के डेरे प्रसन्नता व्याप्त हो गई, क्योंकि सबसे बडा काफिर पकडा गया। कैदियों को बादशाह के डेरे तक पहुंचने में 5 दिन लगे। सम्भा जी को देखते ही औरंगजेब क्रोध तथा प्रसन्नता से भर उठा। उसने सम्भा जी तथा कुलेश को विदूषकों का भेष पहनाया गया। सिर पर ऊंची कलन्दरदार टोपी रक्खी गई, उन्हें ऊंटों पर पूंछ की तरह मुंह करके बिठाया गया। आगे ढोल बजते जाते थे। पीछे पीछे इनका जलूस बाजार में चल रहा था। बन्दियों के दरबार में घुसते ही पहुंचते ही औरंगजेब ने खुदा को सिजदा किया। दुष्ट कुलेश यहां भी कविता सुनाने पर उतर आया तथा कहा-राजन औरंगजेब तुम्हारे सामने खडा न रह सका अतः तुम्हारा अभिवादन कर रहा है। सम्भा जी से कहा गया कि यदि तुम मुसलमान बनना स्वीकार करो तो बच सकते हो। सम्भा जी ने कहा-मैं इस प्रस्ताव पर तभी विचार कर सकता हूं जब पहले मुझे बादशाह की लडकी मिल जाये। कवि कुलेश ने इस्लाम तथा पैगम्बर को गालियां दी। जब औरंगजेब को यह समाचार मिला तो वह भडक उठा। उलेमाओं द्वारा उसे मृत्यु दण्ड सुनाया गया। तब सम्भा जी को बादशाह के सिंहासन के पास लाकर उसकी जीभ काट दी गई, क्योंकि उसने पैगम्बर को गालियां दी थी। फिर सम्भा जी की आंखें निकाल ली गई। औरंगजेब ने उसका एक एक अंग कटवाकर तुलापुर गांव के कुत्तों के सामने फिकवा दिया। सम्भा जी तथा कुलेश के केवल सिर रखवालिये। जिन्हें दक्षिण के बाजारों में डंके की चोट घुमाया गया।

रायगढ के किले पर कब्जा होने पर शिवाजी की शेष विधवाएं तथा सम्भा जी एवं राजाराम के सम्पूर्ण परिवार मुगलों ने बन्दी बना लिये। केवल राजाराम बच गया।

इस प्रकार 32 वर्ष की आयु में सम्भा जी का अन्त हुआ तथा शिवाजी का सम्पूर्ण प्रयत्न मूर्ख सम्भा जी की अदूरदर्शिता तथा विलासिता के कारण भूमिसात् हो गया। 1689 ई० का वर्ष पूरा होने से पहले ही, दक्षिण में मराठाशाही का नाम ही लुप्त हो गया।

सम्पर्क सूत्र
111/19 आर्यनगर, झज्जर
मो० 9996227377

।।ओ३म्।।

महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर में

सोमवार 18 जनू, 2018 से रविवार 24 जून, 2018 तक

सार्वदेशिक आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविर

स्वामी देवव्रत जी की अध्यक्षता में सुयोग्य शिक्षकों के द्वारा आयोजित किया जा रहा है।

आज का नवयुवक सच्ची शिक्षा के अभाव में पथ-भ्रष्ट होता जा रहा है। अण्डे, मांस, मदिरा, अफीम आदि विविध प्रकार के अभक्ष्य और बुद्धि को विकृत करने वाले पदार्थों का सेवन करके अनमोल मानव जीवन को नष्ट कर रहा है। सदाचार की न्यूनता से शरीर को क्षीण करके रोगों से आक्रान्त हो रहा है। अपने माता-पिता, गुरु और श्रेष्ठ विद्वत्जनों के प्रति आदर भावना न्यून होती जा रही है। भारतीय सभ्यता से विमुख होकर अंग्रेजी भाषा और अंग्रेजियत को स्वीकार करके स्वयं को गौरवान्वित मानता है।

ऐसे समय में युवा पीढ़ी को सन्मार्ग दिखाने के लिए गुरुकुल झज्जर की ओर से समय-समय पर बौद्धिक और शारिरिक शिविरों का आयोजन किया जाता रहा है। इसी भावना से ही इस शिविर में युवकों का मार्गदर्शन किया जायेगा।

- *शिविर का प्रवेश शुल्क 300 रुपये है।*
- *आवश्यक सामान : गणवेश हेतु खाकी निकर (आफपैंट), सफेद शर्ट, सैंडो बनियान, सफेद मोजे, सफेद जूते, लंगोट, लाठी, लंगोट, लाठी, नोटबुक, ऋतु के अनुकूल बिस्तर, थाली, डोली तथा अन्य दैनिक प्रयोग का सामान तैल, साबुन, मंजन आदि।*
- *छात्र कम से कम आठवीं कक्षा उत्तीर्ण होवे।*
- *शिविर में संध्या, यज्ञ, प्राथमिक चिकित्सा, व्यक्तित्व विकास के उपाय, योगासन, सूर्य नमस्कार, लाठी भाला, जूडो कराटे, तलवार चलाने आदि का क्रियात्मक प्रशिक्षण दिया जायेगा।*
- *युवकों को आर्य बनाना, व्यसनों से मुक्त करके, सद्विचारवान् बनाकर श्रेष्ठ नागरिक बनाने को प्राथमिकता दी जायेगी।*

अतः इच्छुक छात्रों से निवेदन है कि अधिक से अधिक संख्या में पधारकर अपने जीवन को सफल बनाने का प्रयास करें।

निवेदकः

आचार्य	प्रधान	मन्त्री
विजयपाल योगार्थी	**चौ० पूर्णसिंह देशवाल**	**राजवीरसिंह छिकारा**
9416055044	8053178787	9811778655

पाठकों की प्रतिक्रिया

गुरुकुल झज्जर के मासिक पत्र मार्च 2018 मे श्री विरजानन्द दैवकरणि द्वारा लिखे सम्पादकीय में आर्यसमाज के प्रथम, द्वितीय और तृतीय नियमों पर की गई शंकाओं के संदर्भ में प्रस्तुत लेख। श्री दवकरणि जी का प्रथम नियम पर प्रश्न है कि, ''सत्य विद्या और विद्या ये दो विद्यायें कौन सी हैं ?''

आर्यसमाज के प्रथम नियम-''सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हं, उन सबका आदिमूल परमेश्वर है।'' इसमें सब सत्यविद्या से तात्पर्य है ईश्वरीयज्ञान वेद। वेद मं सृष्टि के सत् और असत् दोनों पदार्थों का सत्य रूप में ज्ञान उपस्थित है जिससे इसमे प्रकाशित विद्या को सब सत्यविद्या कहा गया है। तथा इससे अतिरिक्त विद्या से जाने वाल पदार्थों का अभिप्राय सृष्टि से है। क्योंकि विद्या से रचे पदार्थों का ही ज्ञान होना सम्भव रहता है अनादि पदार्थों का नहीं। इसलिये प्रथम नियम का उद्देश्य है सब सत्यविद्या रूप में वेद का ज्ञान देने वाला और सृष्टि का रचने वाला परमेश्वर है। न कि परा-अपरा, विद्या और पदार्थविद्या से है। अत: नियम के अभिप्राय से अतिरिक्त सोच बनाना व्यर्थ है।

द्वितीय नियम, प्रथम नियम का पोषक है। प्रथम नियम मे जो यह दर्शाया है कि सृष्टि को रचने वाला और वेद रूप में अपना ज्ञान देने वाला परमेश्वर अन्यमत पंथ वालां की भाँति परिछिन्न, अल्पज्ञ, अल्पसामर्थ्य वाला नहीं प्रत्युत वह ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, **अजन्मा**, अनन्त, निर्विकार, **अनादि,** अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, **अमर,** अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है उसी की उपासना करने योग्य है।

इस द्वितीय नियम पर भी श्री दैवकरणि जी का आक्षेप है कि इस नियम में नित्य और पवित्र दो पद न मानकर 'नित्य पवित्र' एक शब्द होना चाहिये क्योंकि ईश्वर सदा से ही पवित्र है। ऐसा नहीं है कि पहले पवित्र नहीं हो और बाद में पवित्र हुआ हो। इसी नियम में अनादि, अमर आदि पदों की विद्यमानता में अकेला नित्य शब्द पढना पुनरुक्ति प्रदर्शित करना प्रतीत होता है। अत: 'नित्यपवित्र' एक शब्द माना जाना चाहिये। इसी नियम में सर्वज्ञ शब्द का अभाव भी खटकता है।'' किन्तु यहाँ आक्षेप करने से पहले नियमों के रचयिता की आकांक्षा, योग्यता आसत्ति और तात्पर्य को समझना होगा तब ही नियमों के अभिप्राय को समझना सम्भव बन सकेगा, अन्यथा नहीं। क्योंकि नियमों के अभिप्राय से अतिरिक्त होकर विचार किया जायेगा तो अन्य पदों पर भी पुनरावृत्ति के दोष मंढना सम्भव बन सकेगा।

द्वितीयनियम में नित्य और पवित्र दो शब्द, दो विशेषणों को दर्शाने के लिये निश्चित किये हैं। क्योंकि हजारों वर्षों से चली आ रही ईश्वरीय स्वरूप की भ्रान्ति को निर्मूल करना आवश्यक समझकर ईश्वर के विभिन्न गुणों का बखान करना अपरिहार्य था जो महर्षि जी ने किया। इसलिये नित्य, पवित्र पदों को लिखना न्याय व तर्क संगत है। अब रही सर्वज्ञ पद के विशेषण को न प्रकट करने की बात तो विहगम दृष्टि से देखने व विचार करने पर सच्चिदानन्दस्वरूप, सर्वशक्तिमान्, सर्वान्तर्यामी, सर्वव्यापक, न्यायकारी सृष्टिकर्त्ता

आदि शब्दों से **सर्वज्ञ** शब्द का भाव प्रकट हो जाता है। इसलिये सर्वज्ञ पद का न लिखना अभाव का द्योतक नहीं है।

अब तृतीय नियम में सच्चाई को जानने के लिख रहे हैं कि इस नियम में सब शब्द सन् 1915 के पश्चात् प्रकाशित नियमों में किसी ने बढाया है। अन्यथा उससे पूर्व के प्रकाशित सब ग्रन्थों में वेद सत्य विद्याओं का पुस्तक है यही छपा मिलता है। साथ में श्री विरजानन्द जी यह भी लिख रहे हैं कि कर्नल अल्काट आदि को भी सब शब्द के प्रति आपत्ति थी। वे तो वेद को ईश्वर प्रदत्त ज्ञान मानने को भी तैयार नहीं थे इसी कारण थियोसोफिकल सोसायटी से ऋषि दयानन्द जी ने सम्बन्ध विच्छेद्ध कर लिया था।'' तो स्वभावतः यह सिद्ध होगया कि महर्षि दयानन्द सरस्वती वेद को सब सत्य विद्याओं का पुस्तक ही मानते थे। प्रेस की भूल से या उनकी दुष्प्रवृत्ति से 'सब' शब्द छपने से रह गया हो। अन्यथा चिंतन करने पर सहज ही में प्रकट हो जाता है कि जब ईश्वर स्वयं में पूर्ण है और पूर्ण होने से ही उनके सभी नियम भी पूर्ण हैं। पूर्ण में अपूर्णता होती नहीं और जो अपूर्ण हो तो उसे पूर्ण नहीं कहा जा सकता। इसलिये जो पूर्ण है वही सब है और जो सब है वही सत्य है तथा इसके विरुद्ध जो अपूर्ण है वह सत्य नहीं और जो सत्य नहीं वह सब भी नहीं। क्योंकि सब सत्य और पूर्ण एक ही अर्थ-भाव वाले होते हैं और जहाँ थोड़ी भी न्यूनता है तो निश्चय ही वहाँ अपूर्णता है, जहाँ अपूर्णता है निश्चय ही वहाँ सत्य का अभाव है वहाँ फिर 'सब' का होना कैसे सम्भव हो सकता है। अतः वेद ईश्वरीय ज्ञान होने से पूर्ण, सत्य और सब ही है। इसीलिये महर्षि दयानन्द सरस्वती ने डंके की चोट घोषणा की, कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वैसे ईश्वर स्वाभाविक मानव को ही नहीं संसार के सभी स्वाभाविक प्राणियों को अपने-अपने स्वरूप में स्वभावतः सब सत्यज्ञान देता है। इसीलिये स्वभाव से बनाये किसी भी प्राणी को अपने-अपने स्वरूप को स्वभावतः सब सत्यज्ञान देता है। इसीलिये स्वभाव से बनाये किसी भी प्राणी को अपने-अपने स्वरूप को पाने के लिये किसी शिक्षण-प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं पड़ती अर्थात् शेर को शेर, गाय को गाय और कुत्ते को कुत्ता होने के लिये किसी शिक्षण-प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं पड़ती प्रत्युत सभी अपने-अपने स्वरूप में पूर्ण होते हैं।

अब रही कर्नल अल्काट और थियोसोफिकल सोसायटी की बात तो वह तभी पूर्णतया ईसाई मत से आबद्ध और वैदिक मत से विरोधी थे। जिससे उनका यहाँ आना बहुरूपिये के रूप में था। वस्तुतः वह महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज के स्वाभाविक शत्रु थे जिससे उनका महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज से जुड़ना और विछिन्न होना दोनों ही महाविनाशकारी कार्य रहे।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने जीवन में थियोसोफिकल सोसायटी के सदस्यों को न समझने की भारी भूल की और उसी भूल का दुष्परिणाम है महर्षि जी का असामयिक निधन, महर्षि और आर्यसमाज द्वारा किये जा रहे भारत को आर्यावर्त, भारतीय को आर्य और भारतीयता को आर्यत्त्व में परिणत करने वाले समस्त कार्यक्रम

को धूल धूसरित कर उनके स्थान पर भारत को पाकिस्तान, इण्डिया, बांगलादेश में निर्माण कर उन्हें मानव-मानवता से दूर कर पाश्चात्य सभ्यता-संस्कृति,भाषा-वेश, शिक्षा-दीक्षा, साहित्य-इतिहास,आहार-व्यवहार के चँगुल में फँसाकर स्वायत्त शासन के लोभ द्वारा सदा-सदा के लिये परतन्त्रता के गहरे फांस में बांधने का आधार बना। हम आर्यजन इस षड्यंत्र को समझे, न समझे। यह हमारे विवेक पर है।

ओमप्रकाश आर्य
ग्राम- खानपुर, तहसील नारनौल
जिला- महेन्द्रगढ़ (हरियाणा)
सम्पर्क सूत्र- 9466330028

प्रतिक्रिया के उत्तर में

1. श्री ओमप्रकाश आर्य ने विचारणीय बिन्दुओं को आक्षेप समझने में भ्रान्ति की है।

2. ऋषि दयानन्द जी के ग्रन्थों में शतश: वर्णित पदार्थविद्या शब्द का अभिप्राय समझना चाहिये।

3. जब सत्यविद्या पद से आपने वेदानुसार सत्-असत् सृष्टि का वर्णन मान लिया तो विद्या शब्द से पुन: सृष्टि मानना क्या अभिप्राय रखता है।

4. सर्वशक्तिमान्, सच्चिदानन्दस्वरूप, सर्वान्तर्यामी, सर्वव्यापक, न्यायकारी, सृष्टिकर्त्ता शब्दों से आप सर्वज्ञ शब्द का भाव निकालते हैं तो कभी यह भी सोचा है कि उपर्युक्त शब्दों के मलूधातु के अर्थ के साथ सर्वज्ञ पद के अर्थ की संगति लगती भी है या नहीं।

5. ऋषि दयानन्द जी सत्यार्थप्रकाश सप्तसममुल्लास में लिखते हैं-...सर्वान्तर्यामी, सर्वनियन्ता, सब का स्रष्टा, सब का धर्ता... यदि आपके मतानुसार सृष्टिकर्त्ता पद से सर्वज्ञ का भाव आ जाता है तो उपर्युक्त पाठ में सर्वज्ञ शब्द का पाठ अनर्थक हो जाना चाहिये।

6. आगे इसी समुल्लास में-शुद्ध, सर्वज्ञ, सबका अन्तर्यामी, सर्वोपरि विराजमान...आदि पाठ में भी अन्तर्यामी पद की विद्यमानता में सर्वज्ञ पद क्यों लिखा है।

7. ऋषि जी ने लिखा है—नित्यशुद्ध बुद्धमुक्तस्वभावो जगदीश्वर। यहां नित्यशुद्ध, नित्यबुद्ध और नित्यमुक्त स्वभाव वाला ईश्वर माना गया है। अत: नित्यपवित्र और नित्यशुद्ध पदों के अर्थ में साम्यता है। इसलिये द्वितीय नियम में नित्यपवित्र एक पद का मानना अभीष्ट है।

8. ग्यारवें समुल्लास में ईश्वर को व्यापक पवित्र स्वरूप माना है, वहां भी नित्यपवित्र का ही भाव है।

9. आपको अभी वैदिक साहित्य और ऋषि दयानन्द जी के ग्रन्थों का सूक्ष्मदृष्टि से अध्ययन करने की आवश्यकता है। साथ ही संस्कृत के शब्दों का अर्थ मूलधातु के साथ संगत करके लगाना भी जानना चाहिये।

10. स्वमन्व्यामन्तव्यप्रकाश में—ईश्वर का विवेचन पढ़ें—जो सच्चिदानन्दादि लक्षण युक्त है, जिसके गुण, कर्म, स्वभाव पवित्र हैं, जो सर्वज्ञ, निराकार, सर्वव्यापक, अजन्मा, अनन्त, सर्वशक्तिमान्, दयालु, न्यायकारी, सब सृष्टि का कर्त्ता...... इस वाक्य में सर्वशक्तिमान्, सर्वान्तर्यामी, सर्वव्यापक, न्यायकारी सृष्टिकर्त्ता शब्दों से आ सकता है, तो यहां भी सर्वज्ञ शब्द का पाठ निरर्थक मानना पड़ेगा। ऐसे अनेक प्रमाण दिये जा सकते हैं।

आशा है आप अपने मन्तव्य पर पुन: विचार करेंगे।

—निवदेक

विरजानन्द दैवकरणि

आर्यसमाज काकड़वाडी मुंबई में डॉ० चंद्रशेखर लोखंडे जी का सम्मान

लातूर (महाराष्ट्र) आर्यजगत् तथा हिन्दी, मराठी भाषा के प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ० चन्द्रशेखर लोखण्डे और पत्नी सौ० संध्या लोखंडे का महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित मुंबई काकडवाडी (गिरगाँव) में दिनांक 18 मार्च 2018 को सपत्नीक सम्मान किया गया। इस कार्यक्रम में मेघालय के राज्यपाल श्री गंगाराम जी उपस्थित थे। स्वातन्त्र्य पूर्व से ही समाज सुधारक एवं वैदिक विद्वानों का इस समाज ने सम्मानित एवं पुरस्कृत किया है।

डॉ० चन्द्रशेखर लोखण्डे जी ने आर्यसमाज और उसके माध्यम से अनेकों राष्ट्रीय एवं सामाजिक कार्य किये हैं। उन्होंने महाराष्ट्र कर्नाटक, और आंन्ध्र में लगभग 500 ग्रामों में वैदिक धर्म का प्रचार प्रसार किया है। लेखन के द्वारा समाज का प्रबोधन करते हुए उन्होंने अब तक 21 पुस्तकें लिखी हैं। सम्प्रति वे स्कूलों और कॉलेजों में हैदराबाद आन्दोलन पर व्याख्यान देकर युवाओं को संस्कृति और स्वातन्त्र्य के प्रति जागरूक करने का महत्त्व पूर्ण कार्य कर रहे हैं। इन्हीं कार्यों को दृष्टि में रखते हुए उन्हें आर्य समाज मुंबई द्वारा "आर्य वैदिक विद्वत् सम्मान" प्रदान कर गौरवान्वित किया गया।

इस कार्यक्रम में मुंबई आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री० मिठाईलालसिंह अध्यक्ष थे। आर्य प्र०नि० सभा के महामंत्री श्री० अरण अब्रोल तथा आचार्य बृहस्पति उडीसा का भी सम्मान किया गया। कार्यक्रम में आर्यसमाज के प्रधान श्री० देशबन्धु शर्मा, मंत्री श्री० विजय गौतमजी, संयोजक श्री० देवदत्त शर्मा, पं० सोमदेव शास्त्री श्री० प्रभाकर गुप्त तथा श्रीमती डॉ० अनीता शास्त्री आदि विद्वान् पदाधिकारी उपस्थिति थे।

भवदीय
प्रकाश हेरकर

अध्यापकों की आवश्यकता

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय आबूपर्वत (सम्बद्ध महर्षि दयानन्द विश्व विद्यालय रोहतक हरयाणा) में संस्कृत-साहित्य, हिन्दी, सामाजिक विज्ञान, विज्ञान, गणित आदि विषयों के अध्यापन हेतु अध्यापकों की आवश्यकता है। कृपया सेवानिवृत्त अध्यापक महानुभाव ही सम्पर्क करें। आवास, भोजन, गोदुग्ध की नि:शुल्क व्यवस्था के साथ-साथ समुचित मानेदय भी दिया जाएगा। इच्छुक महानुभाव गुरुकुल के आगामी वार्षिकोत्सव पर दिनांक 26-27-28 मई को पधारें।

निवेदक
स्वामी धर्मानन्द

सम्पर्क सूत्र:- 8764218881, 9414589510, 8005940943

आर्य आर्युवेदिक रसायनशाला, गुरुकुल झज्जर (हरयाणा)

की विशेष ओषधियां

अभयारिष्ट

गुण :– बवासीर, अजीर्ण, कब्ज, पाण्डु, जिगर तिल्ली आदि पेट के सभी रोग दूर होते है

सेवन:– 2 तौला औषध समान जल मिलाकर प्रातः–सायं भोजनोपरान्त लें

कुटजारिष्ट

गुण :– संग्रहणी, पुराना अतिसार, खूनी दस्त तथा पेचिश की अति उत्तम औषध है।

सेवन:– 1 से 2 तौला औषध समान जल मिलाकर भोनजोपरान्त लें

दशमूलारिष्ट

गुण :– प्रसूता स्त्री के ज्वर, दस्त, उदर पीड़ा, हिस्टीरिया, मूर्च्छा, अर्श, नपुंसकता का नाशक और पुरुषों के बल–वीर्य का वर्धक है

सेवन:– 1 से 2 तौला औषध समान जल मिलाकर लें

लोहासव

गुण :– रक्ताल्पता, पाण्डु, कामला, जीर्ण–ज्वर, ज्वरान्त दौर्बल्य, बढ़े हुए जिगर एवं तिल्ली की सुप्रसिद्ध औषध है

सेवन:– बराबर का जल मिलाकर भोजन के 30 मिनट बाद पीना चाहिए

त्रिफला चूर्ण

यह चूर्ण पेट को नियमित रखता है, मन्दाग्नि मलबन्ध, पुराने दस्त, पेट दर्द में बहुत लाभदायक है नेत्रों के लिए भी हितकारी

अनुपम रस

गुण :– उदरशूल, उदावर्त, आनाह, जिगर तिल्ली, आदि उदर रोगों का नाशक है।

सेवन:– 1 चम्मच चूर्ण प्रातः खाली पेट जल के साथ लें

तालीशादि चूर्ण

गुण :– जीर्ण, खाँसी, अरुचि, अग्निमांद्य तथा कफ प्रधान रोगों में लाभदायक

सेवन:– 1 से 3 माशा ग्राम औषध शहद के साथ लें

पञ्चगव्य घृत

गुण :– यह घृत अपस्मार (मृगी) की अत्युत्तम औषधि है। मूर्च्छा अपतन्त्रक, उन्माद, चौथैया ज्वर तथा उदर रोगों में रामबाण है

कुमार्यासव

गुण :– स्त्री–पुरुषों के उदर रोग, गुल्म, परिणामशूल, यकृत, नलाश्रितवात, जुकाम, कास, वातविकार, गर्भाशय दोष, मासिक धर्म के रागों का नाशक।

सेवन:– 1 से 2 तौला औषध समान जल मिलाकर भोजनोपरान्त लें।

शुद्ध मधु

हम पर्वतीय प्रदेशों से शुद्ध मधु मंगवाते हैं। यह रस आदि के साथ प्रयोग में लाया जा सकता है

मेदोहर गुग्गुल

यह गुग्गुल खून साफ, चर्बी व मोटापे को खत्म कर शरीर को सन्तुलन मे लाता है

सेवन विधि :– गौमूत्र अर्क या शहद नीबू के पानी से दिन में 2 बार

आर्य आयुर्वेदिक रसायनशाला, गुरुकुल झज्जर

गुरुकुल झज्जर के प्रमुख प्रकाशन

१.	व्याकरणमहाभाष्यम् (५ जिल्द) (प्रदीप उद्योत, विमर्शसहित)	१०५०-००
२.	अष्टाध्यायी (पाणिनि मुनि)	४०-००
३.	कारिकाप्रकाश (पं० सुदर्शनदेव)	२५-००
४.	लिङ्गानुशासनवृत्ति (पं० सुदर्शनदेव)	१५-००
५.	फिट्सूत्रप्रदीप (पं० सुदर्शनदेव)	१०-००
६.	अष्टाध्यायीप्रवचनम् (६ भाग) ''	६५०-००
७.	काव्यालंकारसूत्राणि (आचार्य मेधाव्रत)	२५-००
८.	दयानन्द लहरी (मेधाव्रत आचार्य)	१५-००
९.	दयानन्ददिग्विजयम् (१-२ भाग) ''	३५०-००
१०.	निरुक्त (हिन्दीभाष्य) (पं० चन्द्रमणि)	२५०-००
११.	योगार्यभाष्य (पं० आर्यमुनि)	२०-००
१२.	सांख्यार्यभाष्य (पं० आर्यमुनि)	८०-००
१३.	मीमांसार्यभाष्य (३ भाग)	२६०-००
१४.	महारानी सीता (स्वामी ओमानन्द)	१००-००
१५.	छान्दोग्योपनिषद्भाष्यम् (पं० शिवशंकर)	२५०-००
१६.	ओरिजनल फिलासफी ऑफ योगा	२५०-००
१७.	वैदिक गीता (स्वामी आत्मानन्द)	६०-००
१८.	मनोविज्ञान तथा शिवसंकल्प ''	३०-००
१९.	दयानन्दप्रकाश (स्वामी सत्यानन्द)	८०-००
२०.	धर्मनिर्णय (१-४ भाग)	८०-००
२१.	वैदिकविनय (१-३ भाग)	६०-००
२२.	देशभक्तों के बलिदान	१५०-००
२३.	सत्यार्थप्रकाश (स्वामी दयानन्द)	२००-००
२४.	संस्कारविधि (स्वामी दयानन्द)	५०-००
२५.	आर्योद्देश्यरत्नमाला (स्वामी दयानन्द)	५-००
२६	व्यवहारभानु (स्वामी दयानन्द)	१५-००
२७.	स्वतन्त्रता संग्राम में आर्यसमाज का योग	४०-००
२८.	चारों वेद मूल	८८०-००
२९.	सामपदसंहिता	२५-००
३०.	सुखी जीवन (सत्यव्रत)	३०-००
३१.	महापुरुषों के संग में (सत्यव्रत)	१५-००
३२.	दैनंदिनी (सत्यव्रत)	३५-००
३३.	घर का वैद्य (वैद्य बलवन्तसिंह)१-५ भाग	१००-००
३४.	संस्कृतप्रबोध (आचार्य बलदेव)	२०-००
३५.	स्वामी ओमानन्द अभिनन्दन ग्रन्थ	१००-००
३६.	स्वामी ओमानन्द ग्रन्थमाला (४ जिल्दों में)	१२००-००
३७.	ब्रह्मचर्य के साधन (स्वामी ओमानन्द)	१००-००
३८.	प्राचीन भारत के मुद्रांक (भाग-१) ''	६००-००
३९.	स्वामी ओमानन्द जीवन (वेदव्रत शास्त्री)	४००.००
४०.	रामायणार्यभाष्य (दो भाग)	३२०-००
४१.	महाभारतार्यभाष्य (दो भाग)	४५०-००
४२.	प्राचीन भारत में [illegible]मायण के मन्दिर	२००-००
४३.	नौरंगाबाद की मृन्मूर्तियां	२५०-००
४४.	अगरोहा की मृन्मूर्तियां	८००-००
४५.	प्राचीन ताम्रपत्र ए[illegible]लेख	२००-००
४६.	प्राचीन भारत क मुद्रांक (भाग-२)	३००-००
४७.	छन्दःसूत्रम् (हिन्दी भाष्य सहित)	१२०-००
४८.	आर्य सत्संग पद्धति	१०-००

आर.एन.आई. द्वारा रजि. नं. 11757

पंजीकरण संख्या–P/RTK/85-3/2017-19

सुधारक लौटाने का पता :-

गुरुकुल झज्जर, जिला झज्जर (हरयाणा)-124103

E-mail : gurukuljhajjar@gmail.com

ग्राहक संख्या

श्री ____________________

स्थान ____________________

डा० ____________________

जिला ____________________

प्रकाशक आचार्य विजयपाल गुरुकुल झज्जर ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, गोहाना मार्ग, रोहतक में मुद्रक–वेदव्रत शास्त्री के प्रबन्ध से छपवाया।